मार्च 2004
Rs. 10 /-
चन्दामामा

NOW AVAILABLE
AT ALL LEADING STORES

GAMES AND ACTIVITY CD-ROM
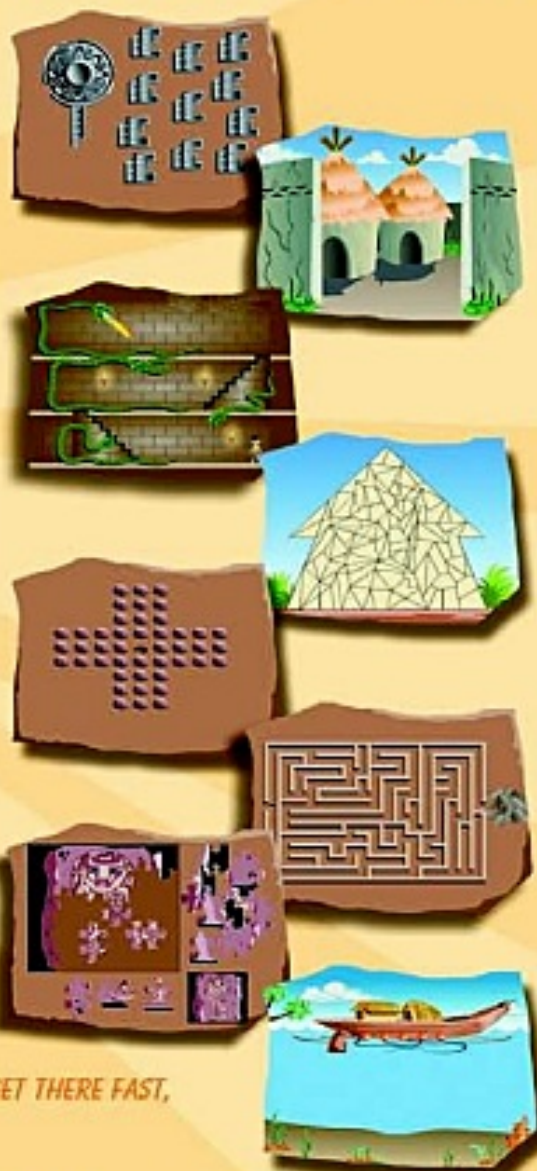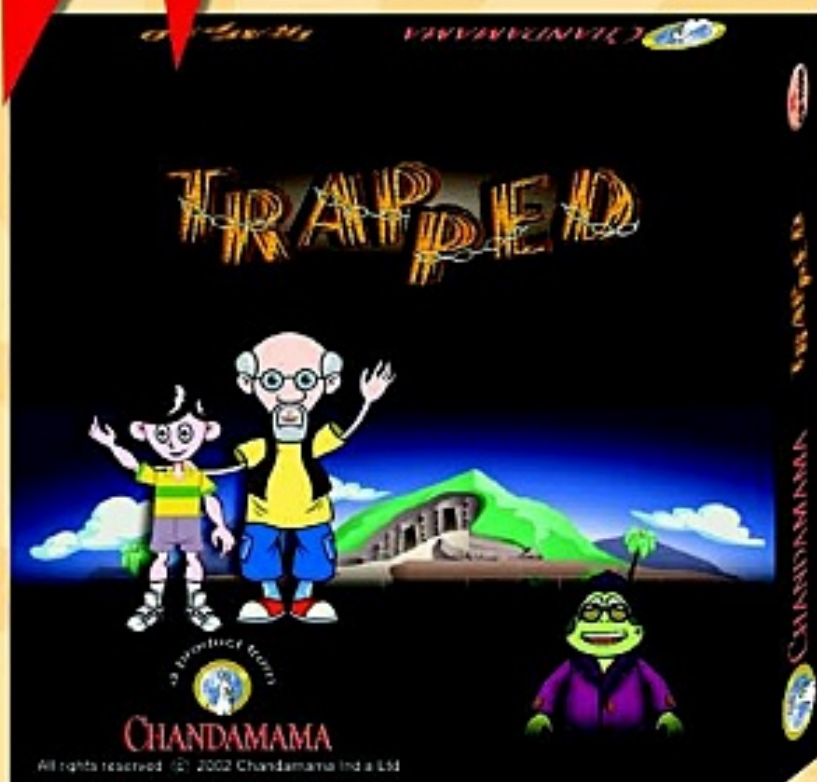
PROF. PURENOTHIN, THE RENOWNED INDOLOGIST, IS TRAPPED INSIDE THE MOUND OF MURUKKI. YOU JOIN DETECTIVE MANDOO TO SEARCH FOR THE PROFESSOR AND SAVE HIM. THE ONLY WAY TO THE MOUND OF MURUKKI IS REVEALED TO YOU. ONLY WHEN YOU CAN GET HOLD OF FOUR KEYS HIDDEN ALONG YOUR ROUTE. AND YOU HAVE TO SEARCH FOR THEM THROUGH A DOZEN DIFFERENT GAMES AND ACTIVITIES. GO FOR CLUES AND KEYS!

MIND YOU, YOU HAVE ONLY 60 MINUTES TO REACH THE PROFESSOR! GET THERE FAST, BUT BEWARE OF YOURSELF BEING TRAPPED!

Hey, but this one is a whole lot of fun!
You have a different set of games and activities, every time you begin your search.

A quality product from **Chandamama**

For more details, please contact :
Chandamama India Limited,
82, Defence Officers' Colony,
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097.
www.chandamama.org

RS. 199/- ONLY

चन्दामामा

प्रस्तुत करता है

"स्वप्न - बालक बनो" प्रतियोगिता

भारत के राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम बच्चों के साथ पारस्परिक क्रिया के क्रम में उन्हें भारत तथा भारतवासियों के भविष्य के लिए स्वप्न देखने की प्रेरणा देते रहे हैं। हाल में ही, २५ जनवरी को राष्ट्र के नाम सम्बोधन के बाद उन्होंने बच्चों के एक समूह को शपथ दिलायी। हमारे तरुण पाठकों को लिए दस-सूत्रीय शपथ नीचे दिया जा रहा है।

१. मैं अपनी शिक्षा अथवा कार्य को समर्पित भाव से आगे बढ़ाऊँगा और उसमें श्रेष्ठ बनूँगा।

२. मैं कम से कम दस अशिक्षित व्यक्तियों को लिखना और पढ़ना सिखाऊँगा।

३. मैं कम से कम दस पौधे रोपूँगा और निरन्तर देखभाल करके उन्हें निश्चित रूप से बड़ा करूँगा।

४. मैं ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों में जाकर कम से कम पाँच व्यक्तियों को व्यसन और जूए की आदत से स्थायी रूप से मुक्ति दिलाऊँगा।

५. मैं अपने दुखी भाई-बन्धुओं की पीड़ा दूर करने का निरन्तर प्रयाम करूँगा।

६. मैं किसी धार्मिक , जातिय तथा भाषा संबंधी मतभेद का समर्थन नहीं करूँगा।

७. मैं स्वयं ईमानदार रहूँगा और भ्रष्टाचार से मुक्त समाज के निर्माण का प्रयास करूँगा।

८. मैं एक प्रबुद्ध नागरिक बनने के लिए प्रयास करूँगा और अपने परिवार को सदाचारी बनाऊँगा।

९. मैं हमेशा उनका मित्र रहूँगा जो मानसिक और शरीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण जीवन से गुजर रहे हैं और हम सब के समान ही सामान्य जीवन जीने के लायक उन्हें बनाने के लिए कठिन श्रम करूँगा।

१०. मैं अपने देश और उपने देशवासियों की सफलता पर गर्व के साथ आनन्दोत्सव मनाऊँगा।

चन्दामामा भारत के बच्चों का एक अनुच्छेद यह लिखने के लिए आमंत्रित करता है कि वे आगामी स्वतंत्रता दिवस तक दस सूत्रों को पूरा करने के लिए कितनी उपलब्धि की आशा करते हैं। यह प्रतियोगिता आठ से लेकर पन्द्रह वर्ष की आयु के बीच के बालक-बालिकाओं के लिए खुला है।

प्रतियोगिता में भाग लीजिए और पुरस्कार जीतिए।

ये तीन प्रविष्टियाँ हमारे **नवम्बर २००४** अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

अन्तिम तिथि
३१ अगस्त
२००४

सूचना और पुरस्कार संबंधी जानकारी के लिए अप्रैल २००४ अंक देखिए।

अब्दुल्ला और तारामती बारादरी

सतरहवीं शताब्दी में अब्दुल्ला नाम का एक सुलतान था। वह कुत्ब शाही खानदान का, जिसने गोलकुण्ड सल्तनत पर राज्य किया, सातवाँ शासक था ।

जब अब्दुल्ला ने राज्य-भार संभाला, तब वह केवल १२ वर्ष का था। वह मशहूर **गोलकुण्ड किले** में रहता था । किला पत्थरों की विशाल दीवारों से निर्मित किया गया था और उसके भीतर अनेक कक्ष और छोटे-छोटे महल थे। किले की ध्वनि प्रणाली ऐसी थी कि प्रतिध्वनियों के माध्यम से, जो दीवारों और मार्गों से टकरा कर लौटती थीं, दोनों ओर से सन्देश भेजे जा सकते थे।

अब्दुल्ला आमोद-प्रिय सुलतान था जिसे कला, संगीत और कविता से बहुत प्रेम था। वास्तव में उसे स्वयं शायरी का शौक था । उन्होंने कम से कम ८० कविताओं की रचना की ।

उसके शासनकाल में एक बहुत प्रतिभा शाली सुन्दर स्त्री थी जो बहुत अच्छा गाती थी । वह एक हिन्दू कन्या थी जिसका नाम **तारामती** था । अब्दुल्ला को उसका गाना बहुत पसन्द था ।

प्रसिद्ध गोलकुण्ड किले के चारों ओर हरियाली ही हरियाली थी जिसमें बहते हुए झरने, फलों से लदे वृक्ष तथा पहाड़ियाँ शामिल थीं । किला भी एक पहाड़ी पर ही निर्मित किया गया था । सुलतान ने किले से एक मील की दूरी पर एक पहाड़ी पर बारह खुले दरवाजों के साथ एक सुन्दर मण्डप बनवाया था । क्योंकि इसमें बारह दरवाजे थे, इसे **बारादरी** कहा जाता था । उसने तारामती को **बारादरी** भेंट कर दिया था, जहाँ से वह गा सकती थी । खुले दरवाजों के कारण वह स्थान शीतल रहता था । उसकी सुरीली आवाज़ किले तक पहुँच जाती थी, जहाँ अपने कक्ष में सुलतान आराम करता था । अब्दुल्ला उसके गाने के लिए विशेष प्रकार के गीत लिखता था, जिन्हें वह झूमते हुए संगीत पर अपनी मोहक आवाज़ में गाती थी । उस स्मारक का नाम इसीलिए तारामती बारादरी पड़ गया ।

गोलकुण्ड किला आन्ध्र प्रदेश की राजधानी हैदराबाद

तारामती बारादरी

संगीत और नृत्य का विभाग

के सीमान्त पर स्थित है। राज्य में पर्यटकों के लिए अनेक दर्शनीय स्थल हैं और उनमें यह किला बहुत लोकप्रिय है। इसका सबसे बड़ा आकर्षण है मन को मोह लेनेवाला ध्वनि और प्रकाश प्रदर्शन जो किले के इतिहास को चित्रित करता है।

तारामती बारादरी का नयी वीथियों तथा मनोहर दीप सज्जा के साथ बहुत बड़े स्तर पर जीर्णोद्धार किया गया है। इसके सम्पूर्ण क्षेत्र को हरे-भरे शाद्वल भूमि में परिवर्तित कर दिया गया है। संगीत तथा नृत्य प्रदर्शनों के लिए विशेष रूप से एक **खुला सभागार** तथा एक दूसरा **इनडोर सभागार** बनाया गया है।

ठहरने के लिए कमरे तथा रेस्तराँ जैसी सुविधाओं के कारण यह स्थान पूर्ण रूप से एक सांस्कृतिक परिसर बन गया है।

तारामती बारादरी का एक बार पर्यटन फिर उसी गीत और संगीत का वातावरण उत्पन्न कर देगा और पर्यटक निश्चित रूप से उसी तरह "वाह! वाह!" कह पड़ेंगे जैसे लगभग ४०० साल पहले सुलतान कह पड़ता था। अतः अगली बार जब आप हैदराबाद आयें तब **तारामती बारादरी** का भ्रमण करना न भूलें।

Newly created facilities around Taramati Baradari
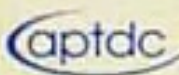
ANDHRA PRADESH TOURISM DEVELOPEMENT CORPORATION

Corporate Office:
'Tourism House', 3-5-891
Himayatnagar, Hyderabad-500 029, AP.
Ph: 040 - 2326 2151 - 54

Taramati Baradari Culture Complex
Ibrahimbagh, Hyderabad-500 031, AP.
Ph: 040 - 2352 0172
Mobile: 98481 92874

चन्दामामा

विशेष आकर्षण   सम्पुट - १०८   मार्च २००४   सञ्चिका - ३

विशेष आकर्षण

अंतरंग

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20
Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail :
subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अंक ९०० रुपये
भारत में बुक पोस्ट द्वारा १२० रुपये अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट
या मनी-ऑर्डर द्वारा 'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें।

For booking space in this magazine please contact:
MUMBAI Sonia Desai : Ph : 022-56942407 / 2408
Mobile: 98209-03124
CHENNAI Shivaji : Ph : 044-22313637 / 22347399
Fax: 044-22312447
Mobile : 98412-77347 email : advertisements @chandamama.org

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

मानव-जीवन के लिए कोई मूल्य नहीं

यह समाचार सुन कर देश काँप गया कि उत्तर भारत में एक चलती गाड़ी में से दो व्यक्तियों को, जो युवावस्था के उत्कर्ष पर थे, धक्का देकर बाहर गिरा दिया गया जिसमें एक की मृत्यु हो गई । उनका अपराध? उन्होंने उसी डिब्बे में यात्रा करनेवाली कुछ लड़कियों के साथ छेड़छाड़ करने वाले अपने ही समान कुछ युवकों के एक गिरोह का विरोध किया था। वे लड़कियों के एक स्टेशन पर उतरने तक इन्तजार करते रहे और फिर उन्होंने कानून को हाथ में ले लिया।

यह सोच कर कि यह घटना हमारे गणतंत्र के जन्म की ५५ वीं वर्षगाँठ के दो दिन पूर्व हुई, जिसने हमें ऐसा संविधान दिया है जो जीवन में स्वतंत्रता और समानता का आश्वासन देता है, शर्म से हमारा सिर झुक जाता है। गणतंत्र दिवस के परेड की शान, जो प्रायः हमारे राष्ट्रीय गौरव और विगत वर्षों में प्राप्त देश की प्रगति के लिए प्रशंसा को दिग्दर्शित करती है, लगता था, फीकी पड़ गई।

प्रगति? निस्सन्देह हुई है— मानव गतिविधि के अनेक क्षेत्रों में; लेकिन ऐसा लगता है जैसे अपने प्राचीन ऋषि-मुनियों एवं शास्त्रों द्वारा सिखाये गये मानव-मूल्यों की मर्यादा बनाये रखने में हम नाकामयाब रहे हैं। हम वनस्पति और पशु जीवन की सुरक्षा की बात तो करती हैं; किन्तु ऐसा लगता है मानों हम मानव जीवन का सम्मान नहीं करते।

तरुण नर-नारी उत्साह और उत्तेजना के भाव से आक्रान्त होकर प्रायः हानिरहित विनोद में उलझ जाते हैं। रेलगाड़ी की घटना में वे निश्चित रूप से मर्यादा की सीमा को लांघ गये। सबसे आश्चर्य की बात यह है कि डिब्बे के अन्दर लगभग सौ यात्रियों में से एक बुजुर्ग ने भी समयोचित हस्तक्षेप नहीं किया, और विरोध की आवाज उठाने का काम दो बहादुर युवकों पर छोड़ दिया गया। उन्होंने यह नहीं समझा कि उन्हें शीघ्र इसका मूल्य चुकाना पड़ेगा। दुःख की बात है, जीवन की गरिमा का कोई मूल्य नहीं रहा।

सम्पादक : *विश्वम*

Visit us at : http://www.chandamama.org

Statement about Ownership of
CHANDAMAMA (Hindi)
Rule 8 (FormVI), Newspaper
(Central) Rules, 1956

1. Place of Publication
   82 Defence Officers Colony
   Ekkatuthangal, Chennai-600 097
2. Periodicity of Publication
   MONTHLY
   1st of each calendar month
3. Printer's Name
   B. VISWANATHA REDDI

   Nationality
   INDIAN

   Address
   82 Defence Officers Colony
   Ekkatuthangal, Chennai-600 097
4. Publisher's Name
   B. VISWANATHA REDDI

   Nationality
   INDIAN

   Address
   82 Defence Officers Colony
   Ekkatuthangal, Chennai-600 097
5. Editor's Name
   B. VISWANATHA REDDI (Viswam)

   Nationality
   INDIAN

   Address
   82 Defence Officers Colony
   Ekkatuthangal, Chennai-600 097
6. Name and Address of individuals who own the paper
   Chandamama India Ltd.

   Board of Directors:
   1. P. Sudhir Rao
   2. Vinod Sethi
   3. B. Viswanatha Reddi
   82 Defence Officers Colony
   Ekkatuthangal, Chennai-600 097

I, **B. Viswanatha Reddi,** *do hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.*

(Sd.)B. VISWANATHA REDDI
1st March 2004 *Publisher*

A TREASURE-TROVE FOR TALENTED TOTS

THE ONE-STOP COMPLETE FUN AND ACTIVITY MAGAZINE.

Mail the form below along with the remittance to : Subscription division, Chandamama India Limited, 82 Defence Officers' Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097.

SUBSCRIPTION FORM

Please enrol me as a subscriber of Junior Chandamama.
I give below the required particulars:

Name :
....

Address :
....
....
.... PIN Code : ....

I am remitting the amount of Rs.120/- for 12 issues by Money Order/Demand Draft/Cheque No.......................................
on................................ Bank ....
branch drawn in favour of Chandamama India Ltd., encashable at Chennai (outstation cheque to include Rs.25/- towards Bank Commission).

Signature

Place : ....
Date : ....

भल्लूक मांत्रिक

5

(राजा जितकेतु को दण्ड देने भल्लूक मांत्रिक कालीवर्मा तथा अन्य लोगों को साथ ले नगर की ओर जा रहा था, तब राजा दुर्मुख के सैनिकों ने उसे रोका। मांत्रिक ने दुर्मुख के समीप जाकर बधिक को अपने मंत्र-दण्ड का स्पर्श कराया। इस पर वह भल्लूक की आकृति में परशु घुमाते दुर्मुख की ओर कूद पड़ा। इसके बाद....)

बधिक जब अचानक भल्लूक के रूप में बदलकर चमकनेवाला परशु हाथ में ले राजा दुर्मुख पर हमला कर बैठा, तब दुर्मुख पल भर के लिए चकित रह गया। उस समय राजा के बचाव के लिए उसके अंग रक्षक आगे आये। उन्हें लात मारकर बधिक ने नीचे गिरा दिया, फिर वह बड़ी तेजी के साथ दुर्मुख के आसन की ओर कूद पड़ा।

तब तक दुर्मुख संभलकर चिल्ला उठा, "सुनो! हमारे सैनिक कहाँ हैं? अंग रक्षक किधर चले गये? इस भालू को रोककर तलवार के घाट उतार दो।" यों आदेश देते हुए दुर्मुख अपने आसन से उतर पड़ा। थोड़ी दूर तक दौड़ते हुए वह अपने घोड़े पर उछलकर सवार हो गया। उसके साथ एक अंग रक्षक भी दौड़कर एक दूसरे घोड़े पर छलांग मारकर जा बैठा।

अंग रक्षक ने दुर्मुख से कहा- "महाराज, फिलहाल यहाँ से हमारा भाग जाना ही सब प्रकार से हितकर होगा। हमारे सैनिक कहीं नदी के तट

पर खेमों में आराम कर रहे हैं। यह खबर पाकर उनके यहाँ आने के पहले ही यह मांत्रिक अपने भालू से हम सब का बध करा सकता है।''

अंग रक्षक यों समझा रहा था, तभी राजा दुर्मुख ने उनके पीछे दौड़े आनेवाले बधिक भालू को देख घोड़े को ललकारा। घोड़ा भालू को देख भड़क उठा और तेजी के साथ भाग गया।

राजा दुर्मुख और उसके अंग- रक्षक को घोड़ों पर सवार होकर भागते देख कालीवर्मा हताश होकर भल्लूक मांत्रिक से बोला- ''गुरु! इधर आस-पास में शासकों के रूप में माने जानेवाले दो दुष्टों में से एक तो हमारे हाथ में आ गया और दूसरा बचकर भाग गया। मुझे इस बात की जरा भी उम्मीद नहीं है कि उसका पीछा करके हमारा बधिक भल्लूक उसे पकड़ पाएगा।''

भल्लूक मांत्रिक दुर्मुख के घोड़े के पीछे दौड़नेवाले बधिक भालू की ओर अपनी दृष्टि दौड़ाते हुए बोला- ''कालीवर्मा! दुर्मुख अगर हमारे बधिक के परशु का शिकार न बना तब हम और तुम इसका फ़ैसला करेंगे।'' फिर वहाँ पर दुर्मुख के मंत्री और सलाहकारों की ओर भल्लूक मांत्रिक ने आँखें लाल करके देखा और पूछा - ''अबे, यह बताओ कि तुम लोग चन्द्रशिला नगर पर हमला करने निकल पड़े हो न? लेकिन तुम्हारी सेना कहाँ पर है?''

इस सवाल का जवाब दुर्मुख के सलाहकारों में से एक ने भर्राये स्वर में यों दिया - ''आप तो महा मांत्रिक हैं। अब तक हमारी सेना का पता आप को लग गया होगा! फिर भी आप पूछ रहे हैं, इसलिए बता देता हूँ। हमारे सैनिक एक नदी के किनारे खेमों में दुश्मन का संहार करने के लिए अपने हथियारों को पैने बना रहे हैं।''

यह जवाब सुनकर भल्लूक मांत्रिक ठहाके मारकर हँस पड़ा। फिर विस्मय के साथ मंत्री जीवगुप्त से पूछा - ''अजी, चन्द्रशिला नगर के मंत्री! तुमने क्या दुर्मुख के सलाहकार की बातें सुनीं?''

''महाशय! सारी बातें सुनीं! मुझे इन सारे दृश्यों को देखने पर ऐसा लगता है कि मैं पागल हो जाऊँगा।'' मंत्री जीवगुप्त ने उत्तर दिया।

''ओह, ऐसी बात है? मेरे और कालीवर्मा के भी इस प्रदेश को छोड़ हिमालय की चोटियों के उस पार जाने के पहले हम कुछ और लोगों का घमण्ड चूर करके उन्हें भी पागल बनाना चाहते

हैं, क्यों महामंत्री, ठीक है न?'' भल्लूक मांत्रिक ने अपने मंत्र दण्ड को जमीन पर पटकते हुए कहा।

''यह सब आप की कृपा है।'' मंत्री जीवगुप्त ने सर झुकाते हुए उत्तर दिया। तभी कालीबर्मा आम के पेड़ों की ओर दृष्टि दौड़ाते हुए भल्लूक मांत्रिक से बोला- ''गुरु! बहुत से सैनिक तलवार और भाले लिये हमारी ही तरफ़ चले आ रहे हैं।'' इन शब्दों के साथ उसने म्यान में से तलवार निकाली और अपने साथ रहनेवाले राजा जितकेतु के सैनिकों को सावधान किया।

राजा दुर्मुख के सलाहकार अब तक भयभीत नज़र आ रहे थे। भल्लूक मांत्रिक ने उनसे कहा- ''अबे सुनो, तुम में से एक आदमी आगे जाकर उन सैनिकों के दलपति को समझाओ कि तुम्हारे राजा की यहाँ पर क्या हालत हो गई है? अगर मूर्खतावश उसने मुझ पर तथा मेरे अनुचरों पर हमला करने की कोशिश की तो तुम लोगों को बाघों और उन्हें हिरणों के रूप में बदलकर उन्हें तुम लोगों का आहार बनाने जा रहा हूँ।''

''महा मांत्रिक इसके सर्वथा योग्य हैं। सुनो, भाइयो, तुम्हारी आँखों के सामने ही इन्होंने बधिक को भयंकर भालू के रूप में बदल डाला है न?'' जीवगुप्त ने सलाहकारों को समझाया।

राजा दुर्मुख के मंत्री और सलाहकारों ने परस्पर एक दूसरे की ओर देखा। उनमें से एक वहाँ से हिला और अपनी ओर बढ़नेवाले सैनिकों के दलपति को समझाया- ''हमारे राजा के लौट आने तक हमें इस भयंकर मांत्रिक के आदेशों का पालन

करना ही सब तरह से हितकर होगा।''

ये बातें सुन दलपति क्रोध में आकर अपने दल के पचास सैनिकों को लक्ष्य करके बोला- ''तुम लोगों ने इनकी बातें सुन ली हैं। मगर मैं इसे केवल जादू मानता हूँ। क्या हम इतने सारे सैनिक एक साथ हठात् हमला करके उस मांत्रिक और उसके अनुचरों का बध नहीं कर सकते?''

''लेकिन, इस बीच मांत्रिक हमें हिरण और बाघों के रूप में अपने जादू के बल से बदल डाले तब हमारी क्या दुर्गति होगी? इस बात पर भी तो हमें बिचार करना होगा न?'' सैनिकों में से एक ने अपनी शंका प्रकट की।

''दलपति महोदय! हम राजा दुर्मुख का नमक खाते हैं, इसलिए जरूरत के वक्त उनके वास्ते हमें अपने प्राण तक निछावर करने को तैयार रहना
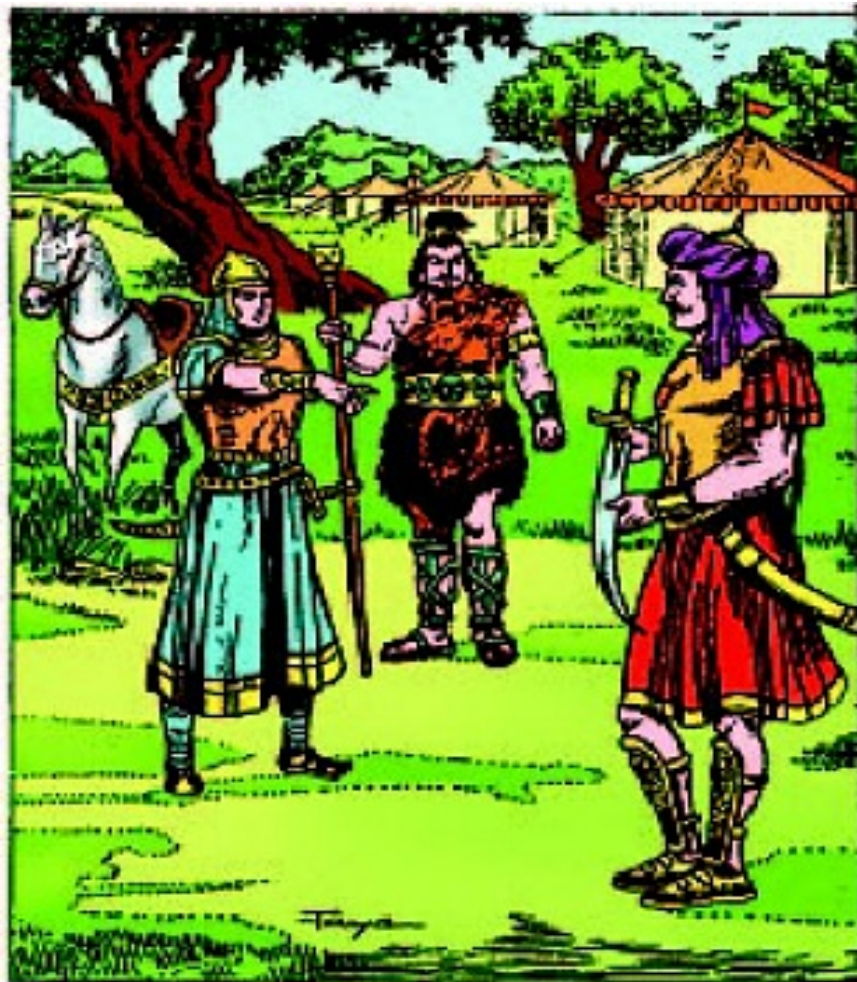
चाहिए। लेकिन इस बात का क्या भरोसा है कि हमारे राजा अभी तक जीवित हैं? यदि उस भयंकर भल्लूक ने अपने परशु से अब तक हमारे राजा का सर काट डाला हो तो हमारी हिम्मत और राज भक्ति बेकार ही हो जाएगी न?'' एक और सैनिक ने आगे बढ़कर कहा।

ये शब्द सुनने पर दलपति के मन में लोभ पैदा हो गया। उसने एक बार चारों ओर नज़र दौड़ाकर अपने मन में सोचा-''अगर हमारे राजा का बध हो जाता है तो वह खुद गद्दी पाने का प्रयत्न क्यों न करे?'' फिर प्रकट रूप में सैनिकों से बोला- ''फिलहाल हम लोगों के लिए चन्द्रशिला नगर पर हमला करने का विचार त्यागकर उदयगिरि लौट जाना ही उचित होगा।''

भल्लूक मांत्रिक ने कालीवर्मा को आँख का इशारा करके कहा- ''कालीवर्मा, मैं तुम्हें दुर्मुख राजा के सैनिकों का नेता नियुक्त कर रहा हूँ। एक बार पूछकर देख लो, सैनिक टुकड़ी का नेता अपनी तलवार तुम्हारे हाथ सौंप देता है या नहीं?''

कालीवर्मा उसी वक़्त दलपति के निकट जाकर उच्च स्वर में बोला- ''तुमने मेरे गुरु की बातें सुन ली हैं न? तुम अभी निर्णय करके बतला दो, तुम अपनी तलवार मेरे हाथ सौंप दोगे या जमीन पर खिसका दोगे?''

दलपति ने कालीवर्मा तथा भल्लूक मांत्रिक की ओर देखा। तलवारवाला उसका हाथ काँप रहा था, वह धीमी आवाज़ में बोला- ''अगर मैं तलवार आप के हाथ सौंप दूँ तो इसका मतलब है कि मैंने राजा दुर्मुख के प्रति राजद्रोह किया है! क्या आप जैसे बुद्धिमानों का हमें राजद्रोह का आदेश देना उचित होगा?''

''यह तो बुद्धिमानी का ही प्रश्न कहा जाएगा। लेकिन तुम्हारे राजा का एक भालू से डरकर तुम सब को ख़तरे में डाल भाग जाना क्या राजोचित कार्य कहा जा सकता है?'' यों कहकर भल्लूक मांत्रिक ने दलपति के बगल के सैनिक का हाथ पकड़कर उसे पीछे घुमाया और उसकी पीठ पर अपने मंत्र दण्ड को टिकाकर बोला- ''लो, देखो, मैं यहाँ पर एक लेपन लगा रहा हूँ। तुम और तुम्हारे अनुचर इसके सहारे अच्छी तरह से देख लो, तुम्हारा राजा कैसी दुरवस्था में है!''

दूसरे ही क्षण सैनिक की पीठ पर वर्दी का

सारा हिस्सा श्यामवर्ण का हो दमकने लगा। उसके भीतर एक जंगल में घोड़ों को दौड़ाते राजा दुर्मुख और उसका अंग रक्षक साफ़ दिखाई पड़े। उनका पीछा करते बधिक भल्लूक दौड़ रहा था। दुर्मुख के घोड़े पर एक पेड़ की ओट में से निकल कर एक हाथी सूंड से प्रहार करने को हुआ। राजा दुर्मुख जोर से चीख उठा और हाथी के प्रहार से बचकर अपने अंगरक्षक के साथ दूसरी दिशा में भाग खड़ा हुआ।

अब अचानक दुर्मुख का पीछा करनेवाले बधिक भल्लूक को सामने आते देख हाथी उसे अपनी सूंड से ऊपर उठाने को हुआ। बधिक भयंकर रूप से चिल्ला उठा और हाथी की सूंड पर अपने परशु का प्रहार किया। सूंड आधा कटकर लटकने लगी। वह भयंकर चिंघाड़ करते हुए पीछे हटा, तभी बधिक भल्लूक उसकी गर्दन पर सवार हो गया। उसके कुंभस्थल पर परशु की मूठ का प्रहार करके गरज उठा- ''वह दुष्ट दुर्मुख कहाँ है? उसका सर काट डालना होगा।''

इस बीच राजा दुर्मुख जंगल में बड़ी दूर तक भाग गया था। उसे इस बात का डर सताने लगा कि बधिक भल्लूक के साथ हाथी भी उसका पीछा कर रहा है। अंग रक्षक ने दुर्मुख को सावधान करते हुए कहा- ''महाराज! लगता है कि हम रास्ता भटककर अपने राज्य की सीमा पार करके कहीं और चले जा रहे हैं।''

इस पर दुर्मुख गुस्से में आकर बोला-''अरे मूर्ख! क्या जान से बढ़कर राज्य की सीमाएँ कहीं

मूल्यवान होती हैं?'' यों कहते घोड़े पर चाबुक चलाई।

उधर भल्लूक मांत्रिक सैनिक की पीठ पर अपने मंत्र दण्ड का वार करते हुए बोला - ''मैंने सैनिक की पीठ पर जो लेपन किया था, उसे इसने खराब कर डाला। कोई बात नहीं! तुम लोगों ने अपने राजा को भागते खुद देख लिया है। अब इसका क्या जवाब देते हो?'' मांत्रिक ने दलपति और उसके सैनिकों से पूछा। भल्लूक मांत्रिक की शक्ति से परिचित दुर्मुख के सैनिक एक स्वर में चिल्ला उठे-''आप ही बताइये, हमें क्या करना होगा?''

''तब तक तुम लोग मेरे साथ चन्द्रशिला नगर को चलो! वहाँ के राजा जितकेतु की खबर लेनी है। सुनो, इस पल से तुम लोगों का नेता कालीवर्मा है।'' भल्लूक मांत्रिक ने अपना आदेश सुनाया।

इसके बाद सब लोग चन्द्रशिला नगर की ओर चल पड़े। उस वक़्त उधर जंगल में भागनेवाले राजा दुर्मुख और उसके अंग रक्षक को पेड़ों की डालों में छिपे डाकुओं का नेता नागमल्ल ने देखा। उसने अपने अनुचरों से कहा-''अबे, आगे घोड़े पर चलनेवाले की पोशाक देखने से ऐसा मालूम होता है कि यह कोई संपन्न परिवार का है। उसके पीछे चलनेवाला व्यक्ति उसका नौकर या सैनिक होगा। अगर हम उन दोनों को प्राणों के साथ बंदी बना लें तो उन्हें छुड़ानेवाले उनके रिश्तेदारों से एक बड़ी रक़म वसूल की जा सकती है।''

उस वक़्त नागमल्ल का एक अनुचर अपने हाथ के रस्से को इधर-उधर घुमाते हुए बोला- ''मालिक! उनके सामने जाकर प्राणों के साथ बन्दी बनाना मुमक़िन मालूम नहीं होता। वे लोग तलवारों से हमारा सामना कर सकते हैं। इसलिए यह रस्सा फेंककर उसके जाल में पहले एक को फँसाना क्या उचित न होगा?''

''अरे, तुमने बड़ी सूझ-बूझ की बात बताई। देखो, वे इसी ओर आ रहे हैं। हमारी पकड़ की सीमा के अन्दर आते ही सबसे पहले तुम घोड़े पर आनेवाले आगे के व्यक्ति की कमर में फंदा डाल कर खींच लो, दूसरे की बात हम दोनों देख लेंगे।'' नागमल्ल ने बताया।
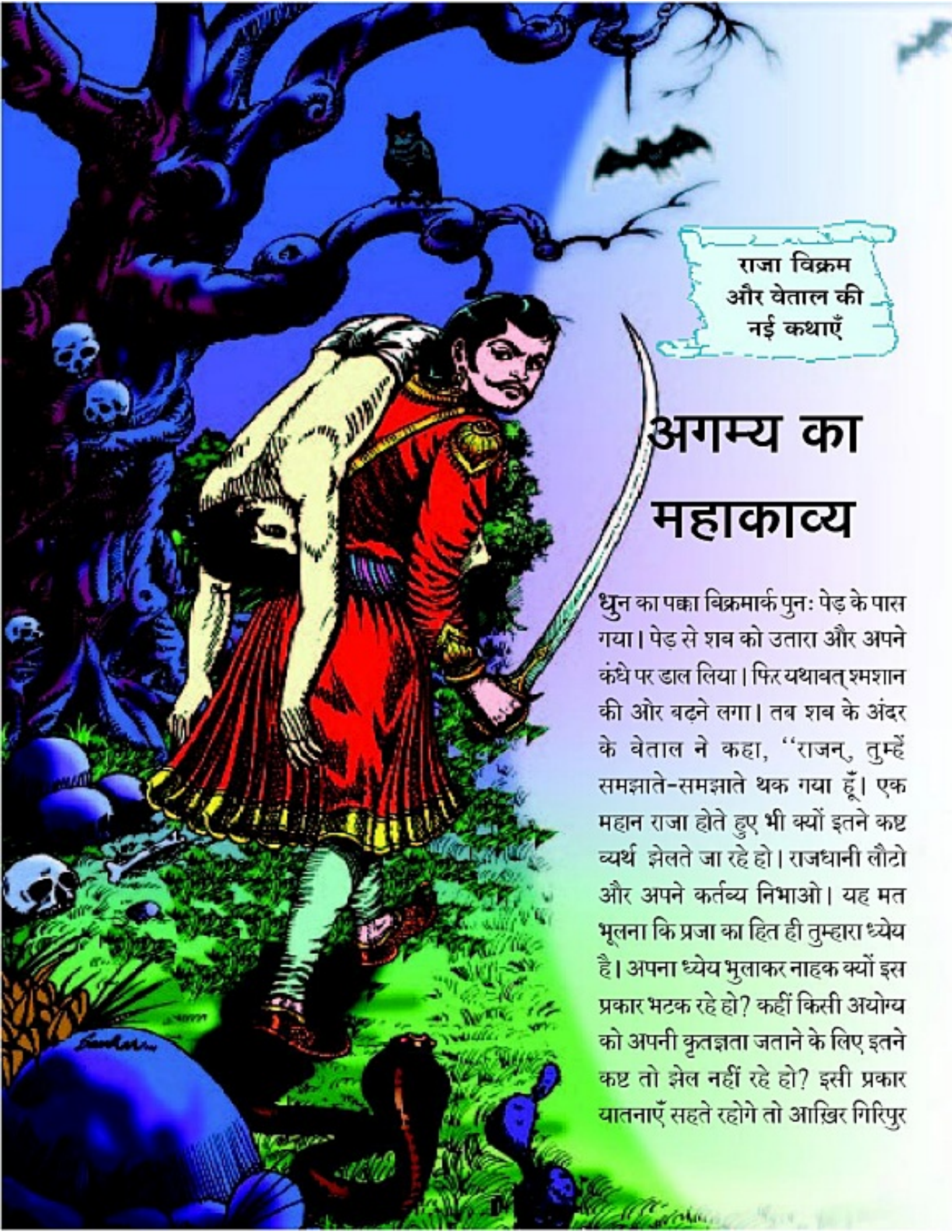
राजा दुर्मुख और उसके अंग रक्षक को इस बात का ख्याल तक न था कि उस महा जंगल में मांत्रिक के भालू के अतिरिक्त कोई और खतरा उपस्थित हो सकता है। वे लोग तो यथासम्भव बधिक भल्लूक से दूर भागने की चिंता में थे।

दुर्मुख जब पेड़ के समीप पहुँचकर उसकी डालों के नीचे से अपने घोड़े को दौड़ा रहा था, तब नागमल्ल के एक अनुचर ने अपने हाथ के फंदे को दुर्मुख की ओर फेंका। फंदा जब राजा की कमर में फँस गया, तब उसने डालों की ओर उसे खींच लिया। घोड़ा तेजी से आगे बढ़ गया। दुर्मुख एक दम चीखकर रस्से में लटकने लगा। उसी समय नागमल्ल और उसका दूसरा अनुचर भी गरजते और तलवार चमकाते डालों में से अंग रक्षक के घोड़े के आगे कूद पड़े।

(और है)

राजा विक्रम और बेताल की नई कथाएँ

अगम्य का महाकाव्य

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा और अपने कंधे पर डाल लिया। फिर यथावत् श्मशान की ओर बढ़ने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा, ''राजन्, तुम्हें समझाते-समझाते थक गया हूँ। एक महान राजा होते हुए भी क्यों इतने कष्ट व्यर्थ झेलते जा रहे हो। राजधानी लौटो और अपने कर्तव्य निभाओ। यह मत भूलना कि प्रजा का हित ही तुम्हारा ध्येय है। अपना ध्येय भुलाकर नाहक क्यों इस प्रकार भटक रहे हो? कहीं किसी अयोग्य को अपनी कृतज्ञता जताने के लिए इतने कष्ट तो झेल नहीं रहे हो? इसी प्रकार यातनाएँ सहते रहोगे तो आख़िर गिरिपुर

के युवराज की तरह तुम भी अपनी ईमानदारी खो बैठोगे। उस युवराज और अगम्य की कहानी मुझसे सुनो।'' फिर बेताल उस अगम्य व युवराज की कहानी सुनाने लगा:

अगम्य नरंपुर में रहता था। अपने को बड़ा कहलवाने की उसकी तीव्र इच्छा थी। बहुत पहले वह बहुत ही ग़रीब था। धन कमाने के लिए उसने बड़ी मेहनत की। अब रहने के लिए उसका एक अच्छा घर है। पत्नी के पास आवश्यक आभूषण और रेशमी साड़ियाँ हैं। बच्चे भी आराम से हैं।

अब अगम्य को मेहनत करने की ज़रूरत नहीं रही। सोचने के लिए उसके पास कितना ही खाली समय है। फ़ुरसत के समय उसे लगता है कि उसने कितने ही महान कार्य कर डाले। किन्तु लोग उसकी महानता को पहचानने से क्यों इनकार कर रहे हैं।

अपनी महानता जताने के उद्देश्य से वह बहुतों को अपने जीवन की विशेषताएँ बताता रहता है। दरिद्रता से मुक्त होने के लिए उसने कितनी यातनाएँ सहीं, ब्योरेवार वह उन्हें बताता रहता है। कुछ लोग यह सब सुनकर चुप रह जाते थे। कुछ लोग अपने जीवन से संबंधित ऐसी ही घटनाएँ बताते रहते थे। कुछ और लोग कह देते थे, ''देश भर में कष्ट झेलनेवालों की भरमार है।''

उसी दौरान पुरंदर नामक एक पंडित उस गांव में आया। उसने लगातार तीन दिनों तक रामायण गाथा सुनायी। पुरंदर के पांडित्य की प्रशंसा मुक्तकंठ से ग्रामीणों ने की। हर रोज़ उसे किसी न किसी के घर में अतिथि-सत्कार मिलता था।

पुरंदर एक दिन अगम्य के घर भोजन करने गया। अगम्य ने उसे स्वादिष्ठ भोजन खिलाने के बाद कहा, ''महोदय, श्रीराम ने नाना प्रकार के कष्ट सहे। परंतु, उन्होंने सभी कष्ट अपने परिवार के लिए ही झेले। अपने पिताश्री को दिये वचन के अनुसार जंगल गये। अपनी पत्नी को पाने के लिए रावण का बध किया। आख़िर कोसल देश का राजा बनकर राज्य-भार संभाला। ऐसे श्रीराम भगवान कहलाये। कितने ही ऐसे लोग हैं, जो अपने-अपने परिवारों की वृद्धि में लगे हुए हैं। परंतु श्रीराम ने जो ख्याति पायी, वह उन्हें क्यों नहीं मिल रही है?''

पुरंदर ने कहा, ''तुम्हारा पक्ष बड़ा ही महत्वपूर्ण है। किसी भी देश के किसी भी परिवार में हर दिन रामायण चलता ही रहता है। बड़ों की

जल्दबाजी, सौतनों के ईर्ष्या-द्वेष, स्वार्थ के प्रलोभन आदि सहज विषय हैं, जिनके कारण बहुत से परिवारों में नरों, वानरों और राक्षसों की सृष्टि होती है और ये दिलचस्प कहानियाँ बनती हैं। राम अवतार पुरुष हैं। दुष्टों को दंड देने और शिष्टों की रक्षा के लिए ही भगवान ने मानव का अवतार लिया और सामान्य मानव बनकर सब प्रकार के कष्टों को झेला। तुम जिन लोगों की बात कर रहे हो, उनकी कहानियों को अगर वाल्मीकि रचेंगे तो उनमें से हर कोई श्रीराम की तरह भगवान बनेगा।''

पुरंदर की बातों ने अगम्य पर पर्याप्त प्रभाव डाला। उसका यह विश्वास पक्का हो गया कि श्रीराम की ही तरह मैं भी महान हूँ। इसलिए उसने कहा, ''महोदय, मैं आपको अपनी कहानी सुनाऊँगा। उसे आप रामायण जैसे महाकाव्य की तरह रचिये। मेरी भी प्रसिद्धि होगी और आपकी भी''।

पुरंदर ने अविलंब कहा, ''काव्य रचने की बात छोड़िये। पहले मैं आपके जीवन की विशेषताएँ सुनने के लिए बहुत ही उत्सुक हूँ।'' फिर उन्होंने अगम्य की बतायी सारी बातें ध्यानपूर्वक सुनीं। इसके बाद पुरंदर को मालूम हो गया कि अगम्य नादान है। पर सच बताकर वह उसके मन को ठेस पहुँचाना नहीं चाहता था, इसलिए कहा, ''अच्छा यही होगा कि तुम अपनी गाथा स्वयं काव्य के रूप में रचो। तब तुम श्रीराम से भी अधिक महान बन सकते हो, क्योंकि श्रीराम अपनी गाथा स्वयं लिख नहीं पाये''।

अगम्य को, पुरंदर की ये बातें अच्छी लगीं। उसने सोचा, जब अशिक्षित वाल्मीकि महाकाव्य रच सकते हैं तो शिक्षित होकर मैं क्यों नहीं रच सकता? यों सोचते हुए उसने अपनी कथा को काव्य रूप देने का निश्चय किया। फिर उसने अपनी जीवन गाथा रची। जो लिखा, उसे दो-तीन बार पढ़ लिया। अपनी रचना-शक्ति पर उसे आश्चर्य होने लगा। पहले वह काव्य उसने अपनी धर्मपत्नी को सुनाया।

अगम्य की पत्नी ने पूरा सुनने के बाद कहा, ''मुझे क्यों सुनाने लगे? इसमें ऐसी कौन-सी बात है, जो मैं नहीं जानती।''

''रामायण में भी ऐसी कोई नयी बात नहीं है, जो तुम नहीं जानती। फिर भी बारंबार उसे क्यों सुनती रहती हो?'' अगम्य ने पूछा।

''राम की गाथा सुनने योग्य है। जो वह गाथा

नहीं जानते, उन्हें अपनी यह गाथा सुनाइये।'' अगम्य की पत्नी ने रूखे स्वर में कहा।

आख़िर उसने अपने पोते-पोतियों को बुलाया और उनसे कहा, ''लव-कुश ने रामायण का प्रचार किया। तुम लोग भी मेरे काव्य को गाते हुए प्रचार करो। यों अपने दादा का ऋण चुकाना।''

सबने ''न'' के भाव में अपना सिर हिलाते हुए कहा, ''हमें तुम्हारी कहानी अच्छी नहीं लगी। चाहो तो हम रामायण का प्रचार करेंगे।''

कोई भी उसकी कहानी सुनने के लिए जब तैयार नहीं था तब अगम्य का भाग्य चमका। एक दिन वह किसी काम पर पास ही का गांव जाने निकला। उसने देखा कि एक पेड़ के नीचे एक युवक बेहोश है। उधर से गुज़रती बैल गाड़ी में उसे वह नंदनपुर ले गया। वैद्य ने युवक की जांच की और कहा, ''इस युवक ने किसी पेड़ का कड़ुवा फल खाया। वह फल दोष पूरित है। मैं जो दवा देनेवाला हूँ, उसे तुम्हें चार दिनों तक खिलाना होगा और उसकी अच्छी देखभाल करनी होगी।'' यों कहकर उसने अगम्य को दवा दी।

चार दिनों के बाद वह युवक होश में आया और पूरा विवरण जान कर उसने अगम्य से कहा, ''आप मेरी रक्षा नहीं करते तो मैं मर गया होता। आपका यह ऋण कैसे चुका सकूँगा?'' ''सचमुच ही मेरा ऋण चुकाना चाहते हो तो मुझसे रचित काव्य सुनो और उसकी प्रशंसा करो,'' अगम्य ने कहा। उस कृतज्ञ युवक ने पूरा काव्य श्रद्धापूर्वक सुना। सुनते सुनते वह बीच-बीच में ऊब गया। पर उसे प्रकट किये बिना काव्य की तारीफ़ के पुल बाँधता गया।

तब अगम्य ने लंबी सांस खींचते हुए कहा, ''आज मेरी पहली इच्छा पूरी हुई। पता नहीं, मेरी दूसरी इच्छा कब पूरी होगी!''

उस युवक ने उत्सुकता -भरे स्वर में पूछा, ''आपकी एक इच्छा पूरी कर दी। दूसरी इच्छा भी पूरी करूँगा। निस्संकोच, अपनी दूसरी इच्छा बताइये।''

''उसकी पूर्ति तुमसे संभव नहीं है। इस देश का राजा ही वह इच्छा पूरी कर सकेगा,'' निरुत्साह-भरे स्वर में अगम्य ने कहा।

''मैं इस देश का राजा तो नहीं हूँ, पर मैं युवराज हूँ। महाराज मेरी बात को नहीं टालेंगे,'' यों युवराज ने अगम्य को प्रोत्साहन दिया।

जैसे ही अगम्य को मालूम हुआ कि जिस युवक की उसने रक्षा की, वह स्वयं युवराज है, तो उसने हर्षित होते हुए कहा, ''इस प्रकार से आपसे मिल पाना मेरा भाग्य है। रामायण को जितना प्रचार मिला है, उतना ही प्रचार मेरे काव्य को भी मिले, यही मेरी दूसरी इच्छा है।''

यह सुनकर युवराज का चेहरा फीका पड़ गया। कहाँ वे राम, कहाँ यह अगम्य? युवराज सोच में पड़ गया।

वह समझ नहीं सका कि क्या किया जाए। पर सोचने के बाद उसे एक उपाय सूझा। उसने अगम्य से कहा, ''अब तक तुमने अपना काव्य कितने लोगों को सुनाया?''

''लगभग बारह लोगों ने मेरा काव्य सुना होगा,'' अगम्य ने कहा। ''ठीक है। इस देश में दस लाख लोग हैं। अब बारह लोगों को छोड़कर बाकी लोग सुनें और उसकी प्रशंसा करें, इसका प्रबंध करता हूँ। तुम्हें एक वचन देना होगा। वाल्मीकि ने अपने जीवन में एक ही काव्य रचा। वह भी एक ही बार। तुम्हें भी वाल्मीकि की तरह दूसरा काव्य रचना नहीं चाहिये।''

अगम्य ने इसके लिए अपनी स्वीकृति दे दी।

युवराज, अगम्य को अपने साथ राजधानी ले गया और महाराज से उसका परिचय कराया। ''इसका नाम अगम्य है। यह मेरा प्राणदाता है। इसने एक महाकाव्य की रचना की। वह काव्य वाल्मीकि के रामायण के बराबर का है। इसे हमारे आस्थान में आदरणीय स्थान दिलाया जाना चाहिये। इसके काव्य का प्रचार देश भर में कराना चाहिये। यही मेरी इच्छा है।''
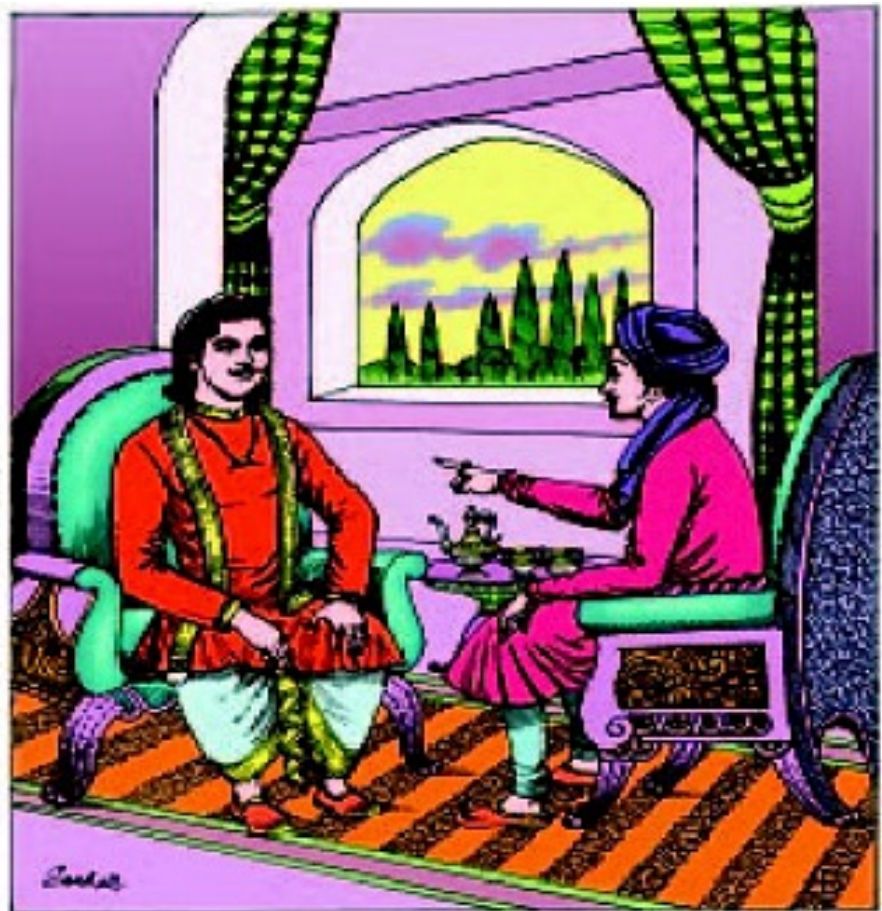
महाराज ने युवराज के प्रस्ताव को स्वीकार किया और आस्थान में उसे आदरणीय स्थान प्रदान किया।

इसके बाद अगम्य के काव्य को लेकर देश भर में बड़े पैमाने पर प्रचार हुआ। वह प्रचार इतने बड़े पैमाने पर हुआ कि बड़े-बड़े पंडित भी उसे पढ़ने के लिए आगे आये। परंतु, किसी को भी वह काव्य प्राप्त नहीं हो पाया। क्योंकि उसकी एक ही प्रति थी और वह युवराज के पास ही थी। जो काव्य के लिए आते, उनसे युवराज कहता, ''दुर्भाग्यवश वह एक प्रति भी आग में जल गयी। फिर से लिखने से अगम्य ने इनकार कर दिया। बस, उस महाकाव्य की स्मृतियाँ मात्र रह गयीं।''

एक महाकाव्य के इस प्रकार नष्ट हो जाने पर कवियों और पंडितों को बहुत दुख हुआ।

महाराज को यह विषय मालूम हुआ। उन्हें लगा कि दाल में कुछ काला है, तो उन्होंने युवराज से इसके बारे में गंभीरतापूर्वक पूछा। युवराज ने अपने पिता को सच बता दिया और कहा, ''अगम्य चाहता था कि उसके काव्य का विपुल प्रचार हो। उसकी अदम्य इच्छा थी कि एक महाकवि के रूप में उसकी पहचान हो। वह उसे प्राप्त हो गया। जब तक लोग इस काव्य को नहीं पढ़ेंगे, तब तक वे इसके प्रचार को और पहचान को मानेंगे, उसका आदर करेंगे। इसीलिए मैंने यह काव्य जला ड़ाला। अगम्य कोई दूसरा काव्य न रचे, इसके लिए मैंने पहले से ही जागरूकता बरती। उससे वचन ले चुका हूँ कि वह दूसरा काव्य नहीं रचेगा। मैं ईमानदार हूँ, सत्य हूँ। अगम्य को दिया वचन मैंने निभाया।''

''मुझे लगता है कि तुम्हारी ईमानदारी में, सत्यनिष्ठा में कोई लोप है।'' महाराज ने असंतुष्ट स्वर में कहा।

वेताल ने यह कहानी सुनाने के बाद कहा, ''राजन्, अगम्य के काव्य की प्रशंसा लोगों से प्राप्त करने में युवराज सफल अवश्य हुआ, पर उसने क्यों कहा कि उन बारह लोगों को छोड़कर सबों की प्रशंसा मिलेगी। क्या ऐसे काव्य की प्रशंसा करना युवराज को शोभा देता है? इसे उसकी ईमानदारी और सत्यनिष्ठा कह सकते हैं? मेरे इन संदेहों के उत्तर जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''अगम्य का काव्य सुना है, बारह लोगों ने। उन सबों ने उसकी प्रशंसा नहीं की। इसीलिए युवराज ने ऐसा कहकर अपनी ईमानदारी साबित की। अपने प्राणदाता को संतुष्ट करने के लिए उसकी झूठी प्रशंसा करना झूठ नहीं कहलाता। अलावा इसके, उस झूठ से किसी को हानि नहीं पहुँचती। साथ ही इसमें युवराज का कोई स्वार्थ भी नहीं है।''

राजा के मौन-भंग में सफल, बेताल शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(आधार श्रीनिवास की रचना)

सब पावन है!

भारत के लोग बहुत से पशु-पक्षियों में दिव्यता के दर्शन करते हैं। मूषक गणेश का वाहन है। उनके पिता शिव जी का वाहन वृषभ है।

हनुमान को राम, सीता और लक्ष्मण की सेवा करने के कारण बहुत सम्मान प्राप्त है और क्योंकि उनका मुख बन्दर का था, इसलिए बन्दरों का शिकार कभी नहीं किया जाता और न उन्हें कोई हानि पहुँचाई जाती है। अधिक से अधिक उन्हें भगा दिया जाता है।

भगवान शिव के दूसरे पुत्र कार्तिकेय का वाहन मयूर है। इन्हें कार्तिकेय के मन्दिरों में पाला और सम्मानित किया जाता है। कार्तिकेय दक्षिण में सुब्रह्मण्य और बलायुध अथवा दण्डपाणि के नाम से अधिक प्रसिद्ध हैं।

भगवान विष्णु क्योंकि अनन्त सर्प पर विश्राम करते हैं, सर्पों को भी श्रद्धा और आदर के भाव से देखा जाता है। भगवान का वाहन गरुड़ है।

श्रीकृष्ण का गायों से गाढ़ा सम्बन्ध है और कुछ विशेष दिनों पर उनकी पूजा की जाती है। जब हम पशु-पक्षियों का आदर करते हैं, तब हम वास्तव में प्रकृति का आदर करते हैं।

भारत की पौराणिक कथाएँ - २३

मोह का हठीला बन्धन

"क्या तुमने कहा कि इस गाँव का नाम वदनपुर है? इससे सुमेर का नाम याद आ गया; पता नहीं क्या हुआ उसका?" गुरु पद्मानन्द ने अपने आश्रम लौटते समय, जो अभी भी २० कि.मी. दूर था, अपने शिष्यों से पूछा। वे अपने दो शिष्यों के साथ तीर्थयात्रा से लौट रहे थे।

सुमेर योग सीखने के लिए आश्रम में रहता था। वह एक भला युवक था जिसमें जिज्ञासु के सभी अच्छे गुण थे। लेकिन एक दिन उसे यह समाचार मिला कि उसके पिता गंभीर रूप से बीमार हैं। वह गुरु को यह वचन देकर कि वह एक महीने में लौट आयेगा, अपने पिता को देखने चला गया।

लेकिन यह दस वर्ष पहले की बात है। गुरु को उस गाँव से गुजरते समय उसके बारे में जानने की जिज्ञासा हुई।

उनके शिष्यों ने एक राहगीर को रोक कर पूछा, "इस गाँव का निवासी सुमेर नाम का एक युवक आश्रम में रहता था। क्या उसके बारे में आप को कुछ जानकारी है?"

"आप सुमेर सेठ के बारे में तो नहीं पूछ रहे हैं? वह गुरु पद्मानन्द का शिष्य था। वह अपने रुग्ण पिता को देखने आया था। मृत्यु के पूर्व उसके पिता ने उसका विवाह कर दिया और महाजनी का अपना व्यापार उसे सुपुर्द कर दिया। वह अपने गुरु के आशीर्वाद से बहुत समृद्ध हो गया है। वह रही उसकी कोठी-गाँव का सबसे विशाल भवन।" ग्रामीण ने एक

शानदार हवेली की ओर इशारा करते हुए कहा।

गुरु और शिष्य उस भवन के उद्यान में प्रवेश कर गये। सुमेर ने अपने घर की छत से उन्हें देख लिया। वह दौड़ कर नीचे आया और गुरु के चरणों पर गिर पड़ा। ''सन्ध्या हो चुकी है। कृपया मेरा आतिथ्य स्वीकार करें। यदि कुछ दिन मेरे घर में बिताना चाहें तो बड़ी कृपा होगी। अन्यथा कल चले जाइयेगा।''

गुरु ने वहाँ रात्रि में विश्राम करना स्वीकार कर लिया। सुमेर ने उन्हें स्वादिष्ट भोजन कराया। जब वह गुरु के साथ अकेला था, वह रो पड़ा, ''गुरुजी, मैं एक कठिन बन्धन में जकड़ गया हूँ। लेकिन जैसे ही मेरे दोनों बच्चे बड़े हो जायेंगे, मैं उन्हें सब कुछ सौंप कर शेष जीवन आप की सेवा में आश्रम में बिताऊँगा।''

''यदि मैं नहीं भी रहूँ तो मैं अपने उत्तराधिकारी को, जो तुम्हारा कोई गुरु भाई ही होगा, बता जाऊँगा कि वह तुम्हारा ध्यान रखे। क्योंकि तुम योग में दीक्षित हो चुके हो, इसलिए तुम्हारे लिए अध्यात्ममार्ग को एकदम छोड़ देना अच्छा न होगा।'' गुरु ने कहा।

दूसरे दिन प्रातः सुमेर को उदास छोड़ कर गुरु आश्रम में लौट गये।

दस वर्ष और गुजर गये। एक बार फिर गुरु वदनपुर से गुजरते समय अपने शिष्य के घर गये। फिर एक बार सुमेर अपने गुरु के चरणों में गिर कर रोने लगा और कहने लगा, ''मेरा पोता मुझे छोड़ता ही नहीं है। जैसे ही वह स्कूल जाने

लगेगा मैं गृहस्थ जीवन का त्याग कर दूँगा।'' उसने गुरु को वचन देते हुए कहा।

''बहुत अच्छा।'' गुरु ने कहा।

अगले वर्ष गुरु ने देह त्याग दिया। लेकिन अपने उत्तराधिकारी को हिदायत दे दी कि वह सुमेर का ध्यान रखे और उसे एकदम सदा के लिए गया समझ कर भूल न जाये। ''उसमें सम्भावनाएँ हैं। लेकिन वह मोह माया के दल-दल में फँस गया है। उसे बचाया जाना चाहिये।''

और भी अनेक वर्ष बीत गये। एक दिन नये गुरु गंगानन्द को सुमेर के बारे में जानने की उत्कंठा हुई। उन्हें याद आया कि गुरु ने उसे कहा था कि उसे भूला समझ कर त्याग मत देना! वह तुरन्त वदनपुर चले गये और यह जान कर उन्हें दुख हुआ कि सुमेर का देहान्त हो चुका है। लेकिन फिर भी उसके बच्चों ने उनका बड़े

सम्मान के साथ स्वागत किया और अपने घर में एक रात विश्राम करने का अनुरोध किया।

घर में घुसने के बाद से ही उसके घर का कुत्ता गुरु गंगानन्द का पाँव चाटने लगा और निरन्तर पूँछ हिलाने लगा। रात में उसे जबर्दस्ती गुरु के कमरे से बाहर निकाला गया। गंगानन्द को कुतूहल हुआ। उन्होंने ध्यान में बैठकर कुत्ते की आत्मा से सम्पर्क स्थापित की और यह जान वे चकित रह गये कि सुमेर की आत्मा कुत्ते में प्रवेश कर घर की रखवाली कर रही है जिससे उसके बेटे-पोते सुरक्षित रह सकें।

गुरु गंगानन्द ने कुत्ते की आत्मा को बताया कि वह पशु-जीवन से मुक्ति के लिए निरन्तर प्रार्थना करता रहे। दूसरे दिन प्रातः गुरु गंगानन्द आश्रम लौट गये।

पाँच वर्ष बाद गंगानन्द, सुमेर के घर पुनः गये। कुत्ते की मृत्यु हो चुकी थी। लेकिन सुमेर की आत्मा का क्या हुआ? मोह-माया के गहरे अज्ञान में डूब जाने के बाद उसकी आत्मा को क्या मुक्ति मिल पाई होगी? रात्रि में ध्यान में उन्होंने देखा कि उसकी आत्मा एक नाग में प्रवेश कर गई है जो लकड़ी के एक विशाल बक्से में छिपा हुआ है। उस बक्स में परिवार का सारा खजाना रखा हुआ था जिसकी उसकी आत्मा रक्षा कर रही थी।

गंगानन्द ने इस बार कठोर कदम उठाने का निश्चय किया। सुबह होते ही उसने परिवार को सूचित कर दिया कि उनके घर के अन्दर एक विशाल पेटी में एक नाग छिपा हुआ है। परिवार ने भयभीत होकर संपेरे को बुलाया और पेटी खोल कर उसमें अगरबत्ती जलाई। धुएं से नाग जब अचेत हो गया तब संपेरे ने उसे बाहर निकाल लिया। नौकर उसे मारने जा रहा था, लेकिन गंगानन्द ने उसे मारने से मना कर दिया और एक पात्र में रख कर उसे वे आश्रम में ले गये। वहाँ उन्होंने मरते हुए नाग के चारों ओर कुछ अनुष्ठान किया, जिससे सुमेर की आत्मा, जो नाग में निवास कर रही थी, शान्तिपूर्वक उसे छोड़ सके।

"जब हम साथ-साथ पढ़ते थे, तब सुमेर कितना ज्ञानवान था। कितना घोर पतन! आह ! मोहमाया का बल कितना हठीला हो सकता है !" गंगानन्द ने आह भरते हुए मन ही मन कहा।

एक हजार कैमरों ने क्लिक किया

पिछले अगस्त में विश्व फोटोग्राफी दिवस के अवसर पर केरल की राजधानी त्रिवेन्द्रम में ऑल केरल फोटोग्राफर्स एसोसियेशन का सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें मंत्रियों, विधायकों तथा अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों की उपस्थिति में उनके अधिकारों के एक 'मैग्ना कार्टा' को सरकारी तौर पर मान्यता प्रदान की गई। इस ऐतिहासिक घटना को समस्त भारत से आये एक हजार से अधिक फोटोग्राफर्स ने अपने कैमरों में कैद कर लिया। एक ही समय में इतने कैमरों के क्लिक करने को एक विश्व रेकॉर्ड माना जा रहा है। एसोसियेशन गिनिज बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड्स में इसकी प्रविष्टि के लिए प्रयास कर रहा है।

अपना कॉलेज उसका लाभग्राही बना

लगभग ३० वर्ष पूर्व डॉ. प्रभु गोयल ने कानपुर स्थित आई.आई.टी. से अपनी डिग्री ली। कुछ दिन पहले वे अपने अलमा मेटर (कालेज) में शोध एवं विकास के लिए दस लाख डॉलर की स्थायी निधि का दान देने आये।

अपने कॉलेज से डिग्री लेने के बाद वे डॉक्टोरेट के लिए अमेरिका चले गये थे, और उसके बाद कैलिफोर्निया में एक नेटवॅक सिक्योर्टी कम्पनी के प्रधान बन गये थे। उस कम्पनी ने एक समस्या के समाधान की खोज की थी जिससे बहुत धन प्राप्त हुआ था।

डॉ. गोयल चाहते थे कि भारत में भी कुछ ऐसा हो और इसके लिए उन्होंने कानपुर आई.आई.टी. के प्रति अपनी कृतज्ञता के ऋण को चुकाने का सबसे अच्छा तरीका यही सोचा जिसकी सहायता से संस्थान राष्ट्र की सहायता के लिए कुछ आश्चर्यजनक कार्य कर सके।

दुर्ग्राह्य गुप्तचर

सन् १९१७ का वर्ष था। प्रथम महायुद्ध चल रहा था। ब्रिटिश गुप्तचर विभाग का प्रधान धर्म संकट में था। जब वह पूरब में ब्रिटिश सेना के साथ था तब उसे मालूम हुआ कि सेना द्वारा

अधिकृत क्षेत्र में दुश्मन के जासूस भरे पड़े हैं। वह सोच रहा था कि इस संकट का सामना करने के लिए सिपाहियों को प्रशिक्षित करने का सबसे अच्छा तरीका क्या हो सकता है।

शीघ्र ही, उस अधिकारी ने, जिसका नाम मैनरिंग था, यह अफवाह सुनी कि जर्मन जासूसी सेवा का एक एजेंट फ्रिट्ज महत्वपूर्ण सूचना लेने के लिए हमेशा ब्रिटिश मोर्चा के पीछे छद्म वेश में रहता है। लेकिन उसकी मौजूदगी अथवा उसकी गतिविधियों का कोई प्रमाण नहीं मिला। तब क्या यह केवल अफवाह थी?

इसके बावजूद मैनरिंग ने यह सूचना अपने ऊँचे अधिकारियों को दे दी। उन्होंने सेना को सावधान करने का निश्चय किया। जर्मन जासूस पर कड़ी नज़र रखने के आदेश जारी किये गये।

एक दिन मैनरिंग को युद्ध बन्दी शिविर का मुआयना करने का आदेश दिया गया। उसे यह जान कर आश्चर्य हुआ कि उसके बारे में वहाँ लोग जानते थे, क्योंकि उसके पहुँचते ही उसे यह बताया गया कि एक यूनानी युद्धबन्दी, जो तुर्की सेना से भाग कर आया था, उससे मिलना चाहता है। मिलने के बाद कैदी की बात सुन कर वह अवाक् रह गया।

''सर, मैं उस आदमी को जानता हूँ जिसे आप पकड़ना चाहते हैं। मैं कुछ दिनों तक एक फ्रिट्ज के लिए काम करता था।''

"क्या? क्या तुम मुझे धोखा दे रहे हो? चकित जासूस ने पूछा।

"बिलकुल नहीं", यूनानी ने विश्वास दिलाया। "यदि आप मुझे यहाँ से आजाद कर दें तब उसे कैद करने में मैं भरसक कोशिश करूँगा।"

बहुत सोचने-विचारने के बाद मैनरिंग उसके प्रस्ताव से सहमत हो गया। लेकिन अपना निर्णय बताने से पूर्व उसने उसे यूनानी वाणिज्य दूतावास में ले जाकर यह निश्चय कर लिया कि वह वास्तव में यूनानी है।

अब यूनानी ने कुछ शर्तें रख दीं। उसने सफाई दी कि फ्रिट्ज के साथ झगड़ा होने के कारण ही उससे वह अलग हुआ था। अब वह पुनः उसके पास लौट जाने को तैयार था, यद्यपि उसे कुछ गुप्त सैनिक सूचना दे दी जाये।

इससे फ्रिट्ज को विश्वास हो जायेगा। तब वह उसे तुर्की मोर्चे से एक निश्चित स्थान पर आने के लिए राजी करने की कोशिश करेगा। इससे फ्रिट्ज को कैद करना आसान हो जायेगा। यूनानी को उसके उद्देश्य की पूर्ति के लिए कुछ अहानिकर सूचनाएँ दे दी गईं। उसके बाद उसे मुक्त कर दिया गया और वह शीघ्र ही गायब हो गया।

एक सप्ताह गुजर गया। अपने वचन के अनुसार यूनानी पुनः प्रकट हुआ और बोला कि फ्रिट्ज ब्रिटिश मोर्चे के अन्दर एक विशेष दिन पर आनेवाला है। यूनानी ने ब्रिटिश गुप्तचर विभाग के प्रधान और जर्मन जासूस फ्रिट्ज के मिलन के लिए एक आदर्श स्थल की व्यवस्था की थी। यह एक सूखी नदी में स्थित एक एकान्त स्थान था जो बहुत निकट आने पर ही दिखाई पड़ता था।

"रहस्यमय फ्रिट्ज अन्ततः मेरे जाल में फंसेगा," उस गुप्त स्थान पर जाने के लिए बड़ी आशा के साथ घोड़े पर सवार होते हुए मैनरिंग ने मन ही मन सोचा। जब वह निकट पहुँचा तब यह देख कर उसे खुशी हुई कि यूनानी पहले से ही वहाँ अपने घोड़े के पास खड़ा है।

तो उस आदमी ने अपना वचन पूरा किया। उसने मैनरिंग को बताया कि फ्रिट्ज एक अर्दली के साथ ब्रिटिश मोर्चे के अन्दर है। वे जल्दी ही आनेवाले हैं। प्रतीक्षा करते समय वे अनौपचारिक बातचीत करने लगे। यूनानी ने यह सिद्ध करने के लिए काफी कागजी सबूत पेश किये कि अब भी फ्रिट्ज के साथ उसका गहरा सम्बन्ध है।

"क्या आप के पास हथियार है?" अचानक यूनानी ने प्रश्न किया।

''हाँ, है।'' जासूस अधिकारी ने कहा।

''तब जैसे ही फ्रिट्ज को देखें, उसे गोली मार दें।'' यूनानी ने सलाह दी।

जब अन्धेरा छाने लगा तब दूर से घोड़े पर आती हुई एक आकृति दिखाई पड़ी। ''ब्रिटिश यूनिफॉर्म में वह अर्दली है। फ्रिट्ज शीघ्र ही उसके पीछे-पीछे आयेगा!'' यूनानी बुदबुदाकर बोला।

अर्दली यूनानी के निकट आया और उसे कुछ कागजात दिये। फिर उसने जर्मन भाषा में कहा कि फ्रिट्ज को, ब्रिटिश सेना द्वारा पीछा किये जाने का कारण, तुर्की सीमा में वापस लौटना पड़ा। यूनानी ने तुरन्त आश्चर्य और निराशा का भाव प्रकट किया। इसके बावजूद, उसने मैनरिंग को विश्वास दिलाया कि फ्रिट्ज कुछ ही दिनों में ब्रिटिश सीमा में लौट आयेगा। उसने दूसरी मुलाकात के इन्तजाम का वादा किया।

जब जासूस अधिकारी ने अर्दली को यूनानी से धारा प्रवाह जर्मन भाषा में बात करते हुए सुना तो उसे कुछ विचित्र लगा। यूनानी भाषा में क्यों नहीं? लेकिन अब उसके सामने यूनानी के परामर्श को मान लेने के सिवा और कोई विकल्प न था। क्योंकि अब भी उस दुर्ग्राह्य फ्रिट्ज को पकड़ने की उसे आशा थी!

''ऐसे संकटकाल में मैं अर्दली को दुश्मन के शिबिर में लौटने नहीं दे सकता। क्योंकि तुम्हें मालूम है कि जिस रहस्य को तीन व्यक्ति जानते हैं, वह रहस्य नहीं है। उसे अभी कैद करना होगा।'' मैनरिंग ने दृढ़तापूर्वक कहा।

यूनानी को यह बात तर्कसंगत लगी और वह सहमत हो गया। अर्दली कुछ गज की दूरी पर घोड़े की देखभाल कर रहा था। यूनानी ने मैनरिंग से अनुरोध किया कि वह घाटी के दूसरी ओर जाकर देख ले कि रास्ता साफ है। ''तब उस आदमी को काबू में कर लेंगे।'' उसने कहा।

मैनरिंग ने अपने पॉकेट में रखे ऑटोमेटिक पिस्तौल के घोड़े पर हाथ रखा। तब वह घोड़े को कुछ दूर तक ले गया और फिर जल्दी से उछल कर सैडल पर बैठ गया। उसी समय कान फाड़ देने वाले दो धमाकों की आवाज सुनाई पड़ी। गोलियाँ उसके पास से निकल गईं। घूम कर देखने पर वह अवाक् रह गया, अर्दली और यूनानी दोनों उस पर गोलियाँ

चला रहे थे। उसका घोड़ा डर से उछलने - कूदने लगा, फिर भी उसने अपने आक्रमणकारियों से यथासम्भव बचने की कोशिश की और गोली चलाई। अर्दली बुरी तरह घायल हो गया। यूनानी आराम से भाग निकला और शीघ्र ही क्षितिज में अदृश्य हो गया। अर्दली का घोड़ा बिना सवारी का उसके पीछे-पीछे चला गया।

मैनरिंग घोड़े से उतर कर उस आदमी के पास गया जो घातक रूप से घायल होकर जमीन पर पड़ा था। उसे अपनी आँखों पर रहसा विश्वास नहीं हुआ जब उसने देखा कि घायल व्यक्ति स्त्री है। स्पष्टतः वह जर्मन थी और ब्रिटिश यूनिफॉर्म में पुरुष की पोशाक में थी। शीघ्र ही उसके प्राण-पखेरु उड़ गये।

जब अधिकारी अपने घर की ओर लौटा तो सूर्यास्त हो चुका था। उसने इस बात पर बहुत दुःख और शर्म का अनुभव किया कि उसने एक स्त्री की हत्या कर दी, हालांकि उसने जान-बूझ कर ऐसा नहीं किया था। यूनानी ने उसे मूर्ख बना दिया था। यूनानी और उसके स्त्री-सहापराधी ने उसे जान से मारने की कोशिश की थी। ''काश! मैं स्त्री के स्थान पर यूनानी को मार पाता!'' उसने सोचा।

यूनानी कौन था? जर्मन स्त्री कौन थी? दुर्ग्राह्य फ्रिट्ज कहाँ था? वे सब रहस्य बने हुए थे, लेकिन बहुत दिनों तक नहीं।

कुछ महीनों के पश्चात् युद्ध समाप्त हो गया। मैनरिंग को एक पत्र मिला। पत्र पढ़ कर उसे धक्का लगा और अविश्वास के साथ उसने आँखें बन्द कर लीं। यह सब उसे कोरी कल्पना लगने लगी। दुर्ग्राह्य फ्रिट्ज न तो हौआ था और न मनगढ़न्त व्यक्ति!

वह एक वास्तविक व्यक्ति था और पूरे महायुद्ध के दौरान जर्मन गुप्तचर विभाग के सभी एजेंटों में सर्वाधिक दक्ष और उपाय-कुशल था।

यूनानी स्वयं फ्रिट्ज था! दुःख की बात है कि वह स्त्री उसकी पत्नी थी! एक दिन, कुछ वर्षों के बाद, ब्रिटिश अधिकार के अन्तर्गत एक क्षेत्र के कैफेटेरिया में फ्रिट्ज और मैनरिंग की आमने-सामने मुलाकात हो गई। निस्सन्देह, वे एक-दूसरे को पहचान गये। शायद वे एक दूसरे को देख कर मुस्कुराये भी। लेकिन वे एक शब्द भी न बोले।

पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

सर्वोत्तम प्रविष्टि के लिए २५० रु.

निम्नलिखित कहानी को पढ़ो:

अनेक तीर्थयात्री एक पहाड़ी की चोटी पर स्थित मन्दिर की ओर बढ़े चले जा रहे थे। यह एक नीरव और नीरस यात्रा थी। कुछ देर के पश्चात् एक युवक ने दूसरे से प्रश्न किया, ''तुम कहाँ से आये हो?'' एक मुस्कान के साथ दूसरे ने उत्तर दिया, ''बिलासपुर।'' ''मैं भी बिलासपुर से आया हूँ। तुम शहर के किस भाग में रहते हो?'' ''पूर्वी सेक्टर में।'' ''कैसा संयोग है! मैं भी पूर्वी सेक्टर में ही रहता हूँ। तुम्हारा कौन सा घर है?'' पहले युवक ने अपना सवाल जारी रखा। ''मैं शिव मन्दिर की बायीं ओर वाले तीसरे मकान में रहता हूँ।'' दूसरे युवक ने कहा। ''कमाल हो गया। मैं भी तो शिव मन्दिर की बायीं ओर के तीसरे मकान में ही रहता हूँ।'' पहले युवक ने उत्तेजित भाव में कहा।

अब, कल्पना करो कि दोनों युवकों ने किस प्रकार अपनी बातचीत को जारी रखा होगा।

* क्या कुछ और समानताएँ बढ़ाई जा सकती थीं?
* क्या अन्य तीर्थयात्रियों को बातचीत में कुछ विचित्रता लगी?

अपनी प्रतिक्रिया १००-१५० शब्दों में लिख कर हमारे पास भेज दो। लिफाफे के ऊपर लिखा होना चाहिये– ''पढ़ो और अपनी प्रतिक्रिया दो''।

अन्तिम तिथि: मार्च ३०, २००४

नाम --उम्र------------जन्मतिथि--------------------

विद्यालय --कक्षा-----------

घर का पता --

--पिनकोड---------------------

अभिभावक के हस्ताक्षर प्रतियोगी के हस्ताक्षर

चन्दामामा इंडिया लिमिटेड

८२, डिफेंस ऑफिर्स कालोनी, इक्कातुथंगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

चन्दामामा प्रस्तुत करता है
जाजपुर
पावन नगरी
ORISSA
TOURISM
Sponsored by

For more information contact: Director, Tourism; Paryatan Bhavan; Bhubaneswar-751014 Orissa, India, Tel: (0674) 2432177, Fax: (0674) 2430887, e.mail:ortour@sancharnet.in website:www.orissa-tourism.com, Tourist Offices at; **Chennai:** Tamilnadu Tourism Complex Ground Floor, Near Kalaivanar Arangam, , Wallajah Road, Chennai - 600002 Ph: (044) 25360891, **Kolkata**: Utkal Bhawan 55, Lenin Sarani Pin-700013, Tel: (033) 22443653, **New Delhi:** Utkalika, B/4 Baba Kharak Singh Marg Pin - 110001, Telefax (011) 23364580

जाजपुर

यज्ञों का पावन आधार

एक समय की बात है, गयासुर नाम का एक शक्तिशाली असुर राजा था। किन्तु वह भिन्न प्रकार का दानव था। वह विष्णु का परम भक्त था। उसकी राजधानी का नगर उसी की स्मृति में 'गया' नाम से विख्यात हो गया। उसके कारण वह स्थान इतना पावन और पवित्र हो गया कि जो भी उस स्थान पर आता, एक अलग ही इंसान बन जाता। वह स्त्री या पुरुष इतना बदल जाता था कि उसके लिए कोई भी गलत काम, क्रूरता या नीचता करना संभव ही नहीं रहता। और तो और, जो कोई भी शारीरिक रूप से गयासुर का स्पर्श पा जाता, वह समस्त पापों से रहित, विष्णु की भक्ति से भर उठता। इसमें

कोई आश्चर्य नहीं, यदि कोई व्यक्ति 'गया' जाता तो गयासुर के स्पर्श का सौभाग्य पाने पर उस स्थान को छोड़ कर कहीं नहीं जाना चाहता। वहाँ रह कर वे सब इतने निष्पाप, पवित्र और आध्यात्मिक बन जाते थे कि मृत्यु के बाद सीधे स्वर्ग को प्राप्त होते।

वीरजा देवी, जाजपुर

एक बार देवताओं और ऋषियों ने एक असाधारण महायज्ञ संपन्न करने का निश्चय किया। इस पवित्र अग्नि-अनुष्ठान को 'यज्ञ' के रूप में जाना गया। इस पवित्र अनुष्ठान का आधार क्या हो? यदि वह आधार जिस पर अग्नि प्रज्ज्वलित की जाएगी, पूर्णतः पवित्र न हुआ तो वह टूट जाएगा और अनुष्ठान अपूर्ण रह जाएगा। ''यह आधार उतना ही शुद्ध होना चाहिए जितनी शुद्ध दानव गयासुर की काया थी।''

जब दानवराज गयासुर को इस बारे में पता चला तो वह इसके लिए अपना शरीर समर्पित करने हेतु सहर्ष तैयार हो गया। उसे दफनाया गया और उसके शरीर के ऊपर अनुष्ठान को संपन्न किया गया। वह इतना विशाल हो गया था कि जिस वक्त उसके मस्तक को 'गया' में धरती के अन्दर

लिटाया गया, उसकी नाभी ठीक उस स्थान पर थी, जिसे आगे चल कर 'नाभि-गया' के नाम से जाना गया, जो उड़ीसा में वैतरणी नदी पर स्थित है।

प्राचीन ऋषियों को यह सब ज्ञात था। वे यह भी जानते थे कि यदि नाभि-गया पर कोई यज्ञ किया जाएगा तो वह निश्चित रूप से फल-सिद्धि प्रदान करेगा। इसके बाद से यह स्थान इस प्रकार के अनुष्ठानों की जगह बन गया। यहाँ तक कि स्वयं ब्रह्मा ने भी इस स्थान पर एक महायज्ञ संपन्न किया। इस यज्ञ की प्रज्ज्वलित अग्नि-ज्वाला से ब्रह्मा के आह्वान पर स्वयं दिव्य माता

का ज्योतिर्मय रूप प्रकट हुआ। 'देवी वीरजा' के नाम से पूजनीय देवी माँ ने उन अनुष्ठानों में भाग लेने वाले संतों की निष्ठा से प्रभावित हो कर उन्हें वचन दिया कि वे वहीं निवास करेंगी। 'देवी वीरजा' इस नगर की अधिष्ठात्री देवी हैं।

समय के साथ यह स्थान अनुष्ठानों के लिए प्रसिद्ध होते होते यज्ञ पुर के नाम से जाना जाने लगा। याग और यज यज्ञ के समानार्थी शब्द हो गए। यह स्थान कालक्रम में 'जाजपुर' के नाम से पुकारा जाने लगा, और आज भी इस स्थान की पहचान इसी नाम से होती है।

धर्मग्रन्थों में भी इस स्थान को वीरजा क्षेत्र या देवी वीरजा का निवास-

वीरजा देवी का मन्दिर

स्थान बताया गया है। शताब्दियों पूर्व यह स्थान मुख्य तीर्थ स्थानों में से एक था। उड़ीसा की परंपरा के एक प्रसिद्ध जानकार प्रो.थॉमस डोनाल्डसन के अनुसार,-''भारत के इस उत्तर पूर्वी तटीय प्रदेश उड़ीसा में मुख्य रूप से ब्रह्मासृजित देव-देवियों की पूजा पाँच क्षेत्रों से जुड़ी है-भुवनेश्वर से 'शिव, पुरी से विष्णु, कोणार्क शहर से सूर्य, महाविनायक स्थल से गणेश और जाजपुर से देवी।''

किसी समय जाजपुर उड़ीसा की राजधानी था, जो प्राचीन काल में कलिंग, उद्रदेश तथा उत्कल नाम से जाना जाता था। छठी शताब्दी में राजा जजाति केसरी ने कान्यकुब्ज नगर से दस हजार ब्राह्मणों को लाकर एक भव्य यज्ञ का आयोजन किया था। उसने या उसके वंशजों ने एक विशाल स्तम्भ का निर्माण किया, जिसके ऊपर एक 'गरुड़' की मूर्ति है। 'गरुड़' जो कि दिव्य पक्षी और विष्णु का वाहन है। इसे शुभ-स्तम्भ के रूप में जाना जाता है।

शुभ स्तम्भ

एक समय ऐसा था, जब जाजपुर तंत्र-शास्त्र के अध्ययन का मुख्य स्थान माना गया था। भारत के सभी भागों से, संभवतः देश के बाहर से भी,
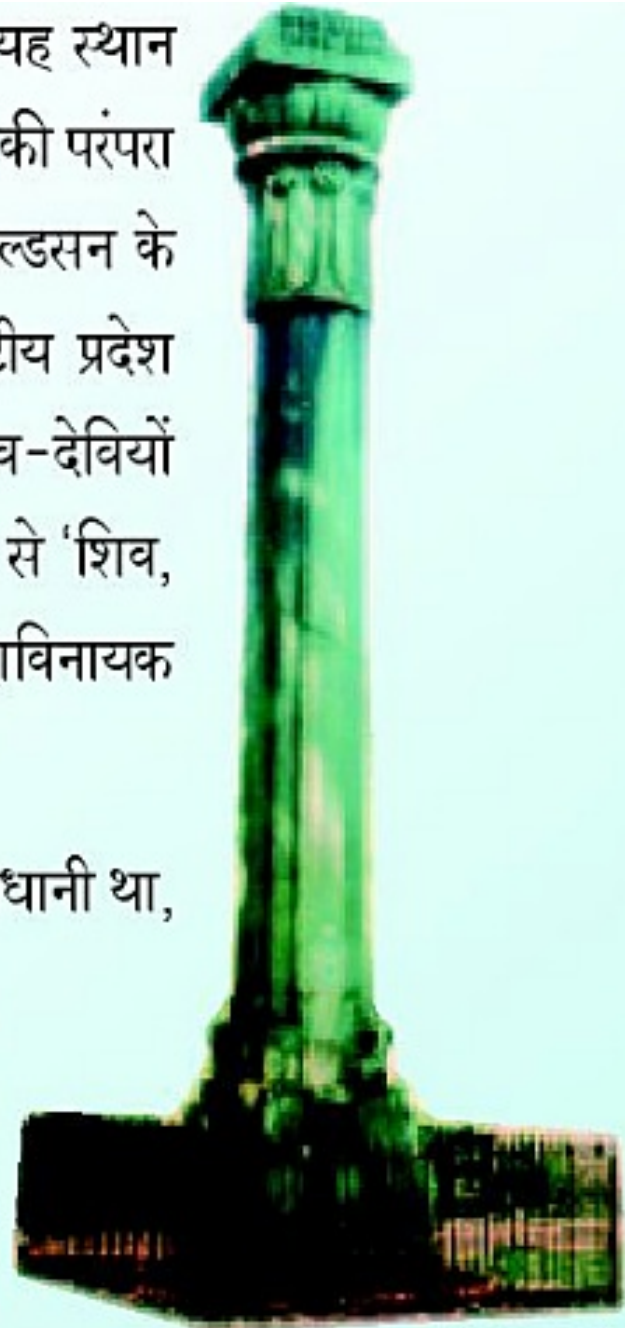
जगन्नाथ मन्दिर

उदाहरण के लिए नेपाल और तिब्बत से सैकड़ों लोग यहाँ आकर तंत्र का अध्ययन और अभ्यास करते थे। जिस समय वीरजा देवी का मंदिर इन क्रियाओं का केन्द्र-स्थान था, कई दूसरे मंदिर भी मुख्य मंदिर के चतुर्दिक बन गए, जो दूसरे कई देवी-देवताओं के थे, जैसे -भैरवदास और भैरवी, जो तंत्र-पूजा से जुड़े थे। प्राचीन मंदिरों और मूर्तियों के अवशेष यह प्रमाणित करते हैं कि उनमें से कुछ भवन और मूर्तियाँ अपनी कलात्मकता और भव्यता की दृष्टि से अनूठे थे।

लेकिन क्या प्राचीन स्मारकों का विध्वंस केवल समय के हाथों ही हुआ है? नहीं! सोलहवीं शताब्दी में एक बर्बर लुटेरा पड़ोसी देश से आया और

अपनी विशाल सेना द्वारा उसने उड़ीसा के भिन्न-भिन्न स्थानों पर हजारों मंदिरों का विध्वंस कर डाला। ऐसा लगता है कि जाजपुर के विध्वंस पर उसका विशेष ध्यान था। वह जुनून में एक-एक मंदिर को नष्ट करता जाता और अधिकांश मूर्तियों को कुचल देता। जब वह समस्त मूतियों को कुचल न पाया तो उसने उन्हें विकृत कर दिया। यह बर्बर अनुयायियों के गिरोह के एक पागल सरदार का कारनामा था। 'काला पहाड़' ने हर संभव प्रयास किया कि वह भव्य शुभ-स्तंभ से गरुड़ की आकृति को गिरा दे, किन्तु वह स्तम्भ को भी न हिला सका।

इतिहासकारों के अतिरिक्त बहुत ही कम लोग हैं जिन्हें उसका मूल नाम याद रहता है। बंगाल के अफ़गान सुल्तान सुलेमान कर्रानी की सेना का नेता- 'काला पहाड़' के नाम से जाना जाता है।
उसने पुरी के जगन्नाथ मंदिर को भी लूटा
और भुवनेश्वर के कई सुन्दर
मंदिरों का विध्वंस करते

हुए आसाम की ओर बढ़ा और गोहाटी के पास ''कामाक्षा देवी के मंदिर पर चढ़ाई कर दी। जो भी हो, अंततः इस बर्बर गिरोह का सामना सम्राट अकबर की नौ सेना से हुआ और वह अपने अंत को प्राप्त हुआ।

किन्तु इससे प्राचीन गौरव की स्मृति धूमिल नहीं हुई। वहाँ दशाश्वमेघ घाट यज्ञों का एक लोकप्रिय स्थल है। नदी के तट पर यह घाट यह स्थान है जहाँ देवताओं और संतों ने स्नान किया था और इसे सप्तरेखा के नाम से याद किया जाता है। वैतरणी नदी पर बाराहनाथ का मंदिर और सप्तमातृका-मण्डप आदि अन्य स्थल हैं जिनके पीछे प्राचीन परंपराएँ जीवित हैं। सप्तमातृका की देवियाँ या सप्त माताएँ हैं—ऐरावत धीरूधा, सुवेशा, सालंकारा, वज्रहस्ता इन्द्रानी, गरुड़ासाना शांतहस्ता वैष्णवी, वृहारुधा त्रिशूलधारिणी, चन्द्ररेखा विभूषणा महेश्वरी, शिखी बाहना, कान्तारूपा कौमारी, हसापुरुष्था सस्मारुधा सर्वभारना, भूषिता ब्रह्मानी, महिषासना वाराहवदना वाराही तथा नग्न देहा सर्पभूषिता कावेरी मुण्डमालिनी भीषणा चामुण्डा। जहाँ एक तरफ

नृत्य करते हुए चमुण्डाः भैरव

देवियों के नाम अपने आप में योग और तांत्रिक परंपराओं की धारणाओं को अभिव्यक्त करते हैं, वहीं दूसरी तरफ वे विम्बविधान के मोहक मुहावरे हैं। देवी वीरजा के प्रभामण्डल से अन्य देवियाँ प्रकट हुईं, जैसे - नवदुर्गा (देवी दुर्गा के नौ रूप) अष्ट चण्डी (चण्डी देवी के आठ रूप) तथा चौंसठ योगिनियाँ अथवा-अर्ध-देवियाँ। वहाँ उन सबके मंदिर थे।

त्रिलोचनेश्वर मन्दिर

सदियों से चली आ रही एक दन्त कथा के अनुसार, अग्निश्वर के रूप में प्रसिद्ध भगवान शिव का प्रतीक दिन-प्रतिदिन अपना रंग बदलता है। वहाँ ऐसे लोग भी हैं जो इस चमत्कार के साक्षी होने का दावा करते हैं।

इस युग के समाप्त होने पर जब तंत्र का इस स्थान पर आधिपत्य था, बौद्धधर्म का उदय हुआ। जाजपुर से लगभग एक मील ही दूरी पर तीन पहाड़ियाँ स्थित हैं जहाँ असंख्य बौद्ध स्मारक हैं । ये पहाड़ियाँ उदयगिरि, ललितगिरि, और रत्नगिरि के नाम से जानी जाती हैं। विख्यात चीनी यात्री ह्वेनसांग ने पुष्पगिरि नाम से इस स्थान की चर्चा की है। इसे उड़ीसा का

उदयगिरि मठ

नालंदा कह सकते हैं। इनमें से एक पहाड़ी पर एक स्तूप के लिए एक चबूतरा है। जब यह गिरा तो एक संदूक मिला जिसमें महात्मा बुद्ध के अवशेष पाए गए।

आज वह संदूक सरकार की सुरक्षा में है। बुद्ध की असंख्य प्रतिमाएँ और मूर्तिकलाएँ इन पहाड़ियों पर पायीगयी हैं, जिनमें बौद्धकालीन जनश्रुतयाँ चित्रित हैं। खुदाई से पता चलता है कि यह स्थान ध्यान और तप की भूमि होने के साथ-साथ शैक्षिक और सांस्कृतिक क्रियाओं से भी स्पंदित था। वहाँ हजारों के लिए आवासीय सुविधाएँ थीं। निस्संदेह पहले से ही स्थापित पवित्र जाजपुर तथा बौद्ध संस्था एक दूसरे से प्रभावित थे। जयपुर में स्थित बौद्ध मूर्तियाँ यही बताती हैं। एक समय ऐसा था जब

बौद्ध धार्मिक क्रियाएँ तांत्रिक अनुष्ठानों से जुड़ गईं और एक नई परंपरा प्रचलन में आई। निश्चय ही जाजपुर नए प्रयोगों की स्थली था, यहाँ तक कि वहाँ देवियों का भी नवीन चित्रण है। एकदम मौलिक कल्पना। इस चित्रण के पीछे दर्शन प्राय लुप्त हो गया। उदाहरण के लिए इतिहासकार गोराचन्द पटनायक के अनुसार, ''महिषासुर मर्दिनी की जो मूर्ति जाजपुर के हनुमानेश्वर मंदिर की बाहरी दीवार पर लगी है। वह कुछ भिन्न है। यहाँ अष्टबाहु देवी को अपनी ऊपरी बाईं भुजा से राक्षस के कंधे दबाते हुए तथा ऊपरी दाहिनी भुजा से उसके शरीर में त्रिशूल भोंकते हुए दिखाया गया है। अन्य हाथों में दूसरे अस्त्र जैसे, तलवार, चक्र, ढाल, धनुष-बाण लिये तथा अंत में राक्षस को दंश मारते हुए सर्प के साथ भैंस के मस्तक

रत्नगिरि

वाले विशालकाय राक्षस पर आक्रमण करती सिंह पर विराजभाव देवी को दर्शाया गया है।

पुनः प्रो.डोनाल्डसन के अनुसार, ''जाजपुर से सात मील दूर खादी पाड़ा में बहुत सी विशालकाय बौद्ध मूर्तियाँ पाई गई हैं, जबकि जाजपुर में ही उड़ीसा की सबसे बड़ी मूर्ति पाई गई है। यह मूर्ति बोधिसत्व पद्मपानी की है, जो बिना पैर और आधार के भी सोलह फुट ऊँची है। इसके अतिरिक्त महायान और वज्रयान के केन्द्र के रूप में जाजपुर के महत्व के प्रमाण वैतरणी नदी के तुरत पार सोलमपुर में पाये गये हैं जहाँ गाँव के अन्दर लगभग पच्चीस मूर्तिकलाएँ बिखरी पड़ी हैं।

प्रो.निष्कर्षतः कहते हैं: ''जाजपुर के मन्दिरों और स्मारकों के निरंकुश विध्वंस के बावजूद जो मूर्तियाँ बच रही हैं उनमें से कुछ उड़ीसा में अपनी तरह के सुन्दर तम और विशालतम स्मारक हैं, जो इस शहर की प्राचीन भव्यता और इस प्रसिद्ध तीर्थ स्थल को धार्मिक क्षेत्र तथा शक्तिवाद और देवी पूजन का मुख्य-स्थल साबित करने के लिए पर्याप्त प्रमाण हैं।

वरुनी उत्सव

वरुनी जाजपुर का एक महत्वपूर्ण उत्सव है, जब लाखों भक्त वैतरणी में पवित्र डुबकी लगाते हैं। इसके तीन प्रकार हैं- जब यह चैत्र (मार्च/ अप्रैल) मास के कृ ष्ण पक्ष के तेरहवें दि न वरुण से जुड़ती है तो उस दिन को 'वारुनी' कहा जाता है। यदि वारुनी शनिवार को पड़े तो उसे महावारुनी कहा जाता है। यदि महावारुनी दिन-रात के किसी शुभ मुहूर्त में पड़े तो इसे महा महा वरुनी कहा जाता है। ऐसी मान्यता है कि इस मुहूर्त में स्नान करने से समस्त पापों से मुक्ति मिल जाती है।

त्रिवेणी अमावास्या

माघ (जनवरी-फरवरी) के महीने में त्रिवेणी अमावस्या को देवी वीरजा के जन्म-दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन देवी को सावित्री की भाँति सजाया जाता है और गायत्री मंत्र के गायन द्वारा उनकी पूजा की जाती है।

रथ यात्रा

नवें दिन से देवी की रथ-यात्रा जो कि आश्विन (सितम्बर-अक्तूबर) के शुक्ल पक्ष के पह ले दिन से प्रारम्भ होनेवाल ी वीरजा की नौ ि दवसीय रथयात्रा एक अनूठा पर्वोत्सव है। देवीवीरजा की मूर्ति को एक सुसज्जित रथ पर शोभा-यात्रा के लिए बाहर निकाला जाता है। रथ पर चाँदी और रत्न जड़ित लाठी रखी होती है।

ऐसा माना जाता है कि यह डण्डा स्तम्भेश्वरी देवी का मूल रूप है। नौ दिनों तक यह रथ प्रतिदिन नौ बार मंदिर की परिक्रमा करता है। अंतिम दिन (महानवमी) की मध्यरात्रि को नरपाड़ा में लक्ष्यबिंध की रस्म पूरी की जाती है। जो लक्ष्यबिंध पाड़िया के नाम से लोकप्रिय है, मंदिर के उत्तर-पूर्व कोने में स्थित है। देवी के साथ चल रहा पुजारी चार दिशाओं में चार तीर छोड़ता है। इसके बाद रात के अंधेरे में देवी को मंदिर वापस लाया जाता है और मंदिर का दरवाजा बन्द हो जाता है। ऐसी मान्यता है कि यदि कोई देवी वीरजा का रथ पर दर्शन पा ले तो उसे समस्त पापों और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति मिल जाती है।

जाजपुर में और इसके चतुर्दिक>>>>>>>

छतिया

छतिया का मन्दिर तीर्थ केन्द्रों में से एक है जहाँ धार्मिक उत्साह के साथ जगन्नाथ की पूजा की जाती है। इस मन्दिर का उनूठापन यह है कि सुभद्रा देवी को जगन्नाथ के बाईं ओर स्थित दिखाया गया है।

अशोक झाड़

महागिरि पहाड़ियों के हरे-भरे जंगल के बीच स्थित अशोक झाड़ नैसर्गिक सौन्दर्य से भरपूर एक महत्वपूर्ण स्थल है। यहाँ के आराध्य देव अशोकेश्वर के नाम पर सम्बोधित यह स्थान वन-विहार के लिए आदर्श माना जाता है।

चण्डीखोल

यह एक खूबसूरत पहाड़ी है जिसकी पृष्ठभूमि में बाबा भैरवनंदा का आश्रम है। चण्डीखोल अपनी स्वास्थ्यप्रद जलवायु तथा बारहमासी झरनों के लिए प्रसिद्ध है तथा समाहांत में पिकनिक के लिए एक आदर्श जगह है।

मुल्लापाल

भगवान लिंगेश्वर के मन्दिर के लिए प्रसिद्ध। सैकड़ों लोग यहाँ प्रति दिन शारीरिक कष्टों से मुक्ति के लिए प्रार्थना करने आते हैं।

व्यास सरोवर

महान ऋषि व्यासदेव के नाम से जुड़ा हुआ व्यास सरोवर उड़ीसा के पावन स्थलों में से एक है। व्यासदेव तथा राघोजी गोसाईं अथवा राघव दास की मूर्तियों की यहाँ पूजा की जाती है। व्यास सरोवर के साथ अनेक दन्त कथाएं जुड़ी हुई हैं, इसी स्थान के पीछे दुर्योधन अपने प्राण बचाने के लिए छिप गया था। प्रत्येक वर्ष यहाँ माघ शुक्ल एकादशी के दिन से एक सप्ताह का मेला आयोजित किया जाता है। जगन्नाथ का मन्दिर, व्यास मुनि का आश्रम तथा सरोवर के तट पर गुप्त गंगा तीर्थयात्रियों के लिए मुख्य आकर्षण हैं।

गोकर्णिका

गोकर्णेश्वर महादेव के देवालय के लिए प्रसिद्ध गोकर्णिका, जारक के निकट राष्ट्रीय राजमार्ग - ५ पर ब्राह्मणी के किनारे बसा हुआ है। यह वनविहार के लिए एक आदर्श स्थान है।

महाविनायक

चण्डीखोल के निकट महाविनायक के मन्दिर में एक लिंगम में पाँच देवता हैं और यहाँ गणपति की आराधना की जाती है।

रत्नगिरि - ललितगिरि - उदयगिरि

ये तीन पहाड़ियाँ तथा उनका प्रतिप्रदेश एक विलक्षण बौद्ध परिसर का निर्माण करते हैं। चीनी तीर्थयात्री ह्वेन सांग ने उसे एक सं वर्द्धनशील बौद्ध विश्वविद्यालय, पुष्पगिरि के रूप में देखा। प्राचीन गरिमा को प्रमाणित करनेवाले बड़े पैमाने पर ईंट के बने पगोड़ों, पाषाण में गढ़े प्रवेशद्वारों तथा गूढ़ बौद्ध प्रतिमाओं के भग्नावशेष यहाँ खुदाई में पाये गये हैं। रत्नगिरि इस परिसर का वास्तव में रत्न है. शानदार ढंग से उत्कीर्ण किये गये। विहार के दरवाजों के बाजु और उत्कृष्ट बुद्ध प्रतिमाएं उत्तर गुप्तकाल की बौद्ध मूर्तिकला के विशालतम संग्रह हैं।
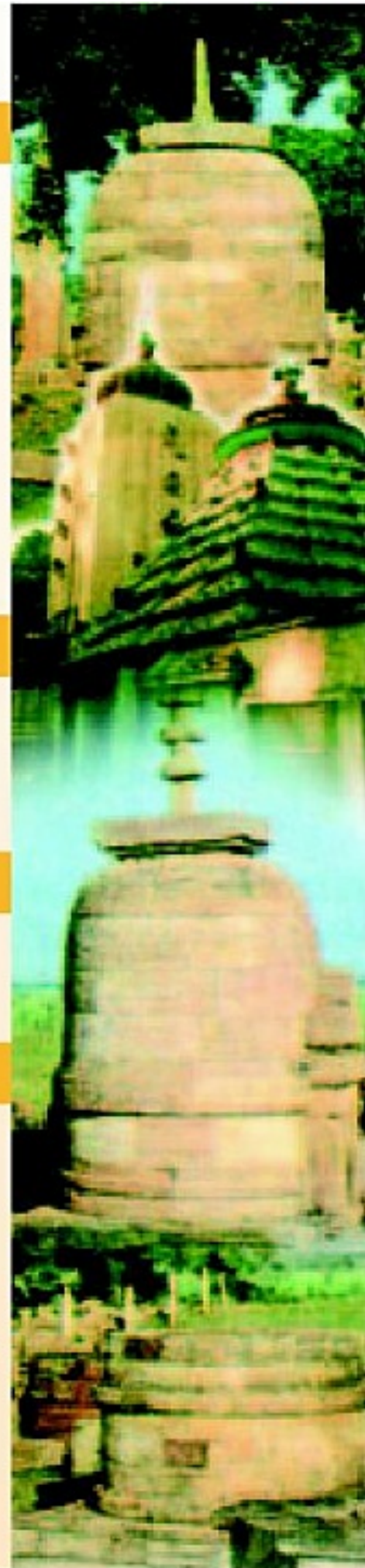
जाजपुर कैसे जायें >>>>

- निकटतम हवाई अड्डा भुवनेश्वर में है- १२० कि.मी.
- कोलकाता-चेन्नै रेलवे लाइन पर निकटतम रेलशीर्ष जाजपुर-क्योंझर है - ३५ कि.मी.
- जाजपुर, कटक, भुवनेश्वर तथा कोलकाता से बारहमासी मार्गों से जुड़ा हुआ है| बस सेवाएँ हमेशा उपलब्ध हैं|

ठहरने योग्य स्थान >>>>>>

- वीरजा पंथशाला (उड़ीसा पर्यटन)
  टेलिफोनः ०६७२८ - २२२०२९
- मोनोरिलैश लॉज
  टेलिफोनः ०६७२८ - २२२१३४
- होटल सत्या
  टेलिफोनः ०६७२८ - २२३७५१
- होटल आश्रय
  टेलिफोनः ०६७२८ - २२४२४३

सहायता के लिए फोन करेंः

वीरजा पंथशाला, जाजपुर (०६७२५ - २२२०२९)

पर्यटक काउण्टर, जे.के.रोड (०६७२८ - २२०२४२)

पर्यटक काउण्टर, कटक रेलवे स्टेशन-(०६७१ - २६२०५०७)

तथा पर्यटक कार्यालय, कटक (०६७१ - २३१२२२५)

Raghurajpur:
A Legacy of Creativity

10kms from Puri and 50 kms from Bhubaneswar stands Raghurajpur - the simple but highly acclaimed coconut-palm- shaded village... Silent like the gentle dew that falls in the morning, the art of patachitra, revitalised from family sketch - books, has been handed down from generation to generation. This idylic village, by the southern bank of river Bhargavi, is a rare village in India, where each family is engaged in the profession of preparing some handicraft or other... be it pata painting, ganjapa, palm leaf engravings, stone carvings, wood carvings or be it tusser painting. Many of the savours of this art have been honoured by National Awards.

A living museum of art, tourists can see the artists, ceaselessly at work . The deft fingers of the master craftsmen aided by their family members work on this fascinating and communicative form of art.

So... it's time to lose yourself in the real Indian village of creativity and wander in the elegant pastures of Aestheticism and Art, of course, with a capital "A".

For more information contact: Director, Tourism; Paryatan Bhavan Bhubaneswar-751014, Orissa, India, Tel: (0674) 2432177, Fax: (0674) 2430887 e.mail:ortour@sancharnet.in, website:www.orissa-tourism.com

Tourist Offices; **Chennai:** Tamilnadu Tourism Complex, Ground Floor Near Kalaivanar Arangam, Wallajah Road, Chennai - 600002, Ph: (044) 25360891

Kolkata: Utkal Bhawan 55, Lenin Sarani, Pin-700013, Tel: (033) 22443653

New Delhi: Utkalika, B/4 Baba Kharak Singh Marg, Pin - 110001, Telefax (011) 23364580
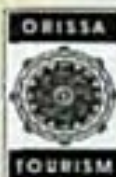
Touch Orissa to feel India
Feel the pulse of Orissa... and you will hear the throb of India. In diversity lies the unity of the age-old traditions. The " Rath Yatra " of Lord Jagannath transcending the boundaries of the nation is now a universal sensation. The teeming millions, with hearts full of devotion, the throbbing drums, the frenzied cymbals, the roar of the crowds, the chanting of the priests.... that is India for you, and of course, her immortal tradition. Orissa has the pride of preserving and protecting its simple and arcadian past by cradling under her wings 62 distinct tribal groups.... complete, with their indigenous customs, rhythms of dance, beliefs and traditional festivals. Orissa's ancient art and craft have its strong tribal traditions kept ablaze in the new Millennium. Applique in Orissa is an old temple-art that brings about a marriage of technicolours on cloth. Cross-cultural influences are seen in the silver and breath-taking renditions of silver-craft which leave the viewers breathless.
Stroll into Orissa and walk hand in hand with the tradition of India.
Tradition
Explore
ORISSA
The soul of India
ORISSA
TOURISM
information contact: Director, Tour
Bhavan, Bhubaneswar 751014
India, Tel: (0674) 2432177, Fax: (0674)
website:www.orissa-tourism.com, Tourist Offices at; Chennai:
Tourism Complex
Ground Floor, Near Kalaivanar Arangam, , Wallajah Road,
600002
Ph: (044) 25360891, Kolkata: Utkal Bhawan 55, Lenin Sarani
Pin-700013, Tel: (033) 22443653, New Delhi: Utkalika, B/4 Baba Kharak Singh Marg
Pin - 110001, Telefax (011) 23364580

तमिलनाडु की एक लोक कथा

पसीने की कमाई

यह एक ऐसे ब्राह्मण की कहानी है जो राजा से उसके राजकोष के धन का नहीं, बल्कि उसके पसीने की कमाई का ही उपहार स्वीकार करता था।

राजा उदार और दानशील प्रकृति का था और उसके दरबार से कोई भी खाली हाथ नहीं लौटता था। योग्य व्यक्तियों को दिये गये पुरस्कार और सम्मान का तो कहना ही क्या? गरीब प्रजा का जो भी व्यक्ति खाली झोली लेकर आता, उसे अन्न और वस्त्र से भर दिया जाता था।

नये साल का पहला दिन आया। उत्सव के अन्त में नागरिक राजा से उपहार लेने के लिए पंक्ति में खड़े हो गये। एक भी व्यक्ति निराश नहीं लौटा। जब सब लोग उपहार लेकर चले गये तब राजा की दृष्टि एक ब्राह्मण पर पड़ी जो न तो बहुत सुखी-सम्पन्न और न अधिक दीन हीन लग रहा था। और वह धैर्यपूर्वक अपनी बारी की प्रतीक्षा में खड़ा था। अभी भी वितरण के लिए ढेर सारे उपहार शेष पड़े थे।

राजा ने पूछा, "कहिये पंडित जी, आप को उपहार में क्या दूँ; वस्त्र, अन्न या मोतियों का हार?"

"इनमें से कुछ भी नहीं महाराज।" उसने कहा, "क्या कोई ऐसी चीज है जिसे आपने पसीने की कमाई से अर्जित की है? मैं उसे और सिर्फ़ उसे ही स्वीकार करूँगा।"

राजा यह सुन कर चकित रह गया। उसने एक क्षण के लिए भी नहीं सोचा कि ब्राह्मण धृष्ट है। बल्कि उसकी बात में उसे कुछ सचाई दिखाई पड़ी। उसने उपहारों के अम्बार पर नज़र डाली। उनमें से एक भी उसकी मेहनत की कमाई से नहीं लाया गया था।

उसने इन उपहारों पर केवल राजकोष का ही धन खर्च किया था जिसमें कर के रूप में प्राप्त प्रजा का पैसा लगा था। "पंडित जी, मेरे पास कुछ भी ऐसा नहीं है जो मेरे व्यक्तिगत पैसे से लाया गया हो। मैं अभी भी आप से निवेदन करता हूँ कि आप के सामने जो भी उपहार

दिखाई दे रहा है उसे हमारे आदर के साथ और अपनी विद्वता और ज्ञान की मान्यता के रूप में स्वीकार करें।''

ब्राह्मण ने उत्तर देने से पूर्व दुबारा नहीं सोचा, ''नहीं महाराज, मैं इन्हें स्पर्श नहीं करूँगा। मैं केवल वही स्वीकार करूँगा जो केवल उचित और न्यायसंगत है।''

राजा ने सोचा कि यदि मैं इसे आनन्द के इस अवसर पर खाली हाथ जाने दूँ तो यह मेरे लिए शर्म की बात होगी। उसने ब्राह्मण को प्रसन्न करने के लिए पूरा प्रयास करने का निश्चय किया, लेकिन इसके लिए उसे समय की आवश्यकता थी। ''ठीक है, पंडित जी, कृपया कल आइये और जो भी कठिन श्रम से मैं अर्जित करूँगा, मैं आप को निवेदित कर दूँगा।''

ओठों पर मुस्कान के साथ ब्राह्मण ने झुक कर राजा को प्रणाम किया। राजा अपने कक्ष में जाकर मजदूर के वेश में बाहर आया और काम की तलाश में निकल पड़ा। किन्तु अफसोस! किसी ने उसे काम नहीं दिया।

अन्त में वह समुद्र तट पर पहुँचा, जहाँ मछुआरे जाल डालने की तैयारी कर रहे थे। राजा ने उनकी मदद करने का अनुरोध किया किन्तु मधुआरों ने उसकी मदद लेने से इनकार कर दिया।

तब वह एक अन्य मछुआरे के पास जाकर कुछ काम मांगने लगा। मछुआरे को राजा पर जो फटे चिथड़ों में लिपटा एक गरीब मजदूर लग रहा था, दया आ गई। उसने राजा से पूछा, ''क्या तुम बडी मछली के बदले ताम्बे का एक सिक्का और छोटी मछली आने पर एक कौड़ी स्वीकार करोगे?''

राजा के सामने कोई विकल्प न था। उसने मछुआरे की शर्त मान ली और वह जाल लेकर समुद्र में उतर पड़ा तथा पानी में कुछ दूर जाकर जाल फैला दिया।

काफी देर खड़ा रहने के बाद उसने जाल को खींचा। किस्मत से उसे जाल में एक बड़ी मछली और एक छोटी मछली मिली। उसने महसूस

किया कि मछली पकड़ने के काम में उसका कोई अनुभव नहीं है, इसलिए रात भर खड़ा रहने पर भी उसे विशेष सफलता नहीं मिलेग़ी। इसलिए वह मछुआरे के पास गया। उसने राजा के हाथ में वादा के अनुसार ताम्बे का एक सिक्का और एक कौड़ी रख दी।

राजा ने उसे धन्यवाद दिया और वह रक्षकों से आँख बचा कर, जो रात भर पहरा देने के बाद सो रहे थे, महल में लौट आया। दूसरे दिन जब दरबार लगा तब ब्राह्मण राजा से उपहार पाने की प्रतीक्षा कर रहा था।

''पंडित जी, गत रात्रि मैंने कठिन श्रम करके ताम्बे का एक सिक्का और एक कौड़ी अर्जित की है। मैं उन्हें आप की भेंट करता हूँ। लेकिन अभी भी राज कोष से कुछ और स्वीकार करना चाहें तो वह भी भेंट कर सकता हूँ। कृपया संकोच न करें।'' राजा ने पूरी सत्यनिष्ठा के साथ निवेदन किया।

''नहीं महाराज, मैं इनमें से कुछ भी नहीं लेना चाहता, क्योंकि न्यायतः ये प्रजा के लिए हैं'', ब्राह्मण ने कहा, ''लेकिन आपके पसीने की कमाई को सहर्ष स्वीकार करूँगा। क्या मैं ताम्बे का सिक्का और कौड़ी ले सकता हूँ?''

राजा ने तुरन्त सिक्का और कौड़ी निकाली और ब्राह्मण को दे दिया। ब्राह्मण ने धन्यवाद देते हुए कहा, ''आपने इन्हें कठिन परिश्रम से कमाया है, इसलिए ये मेरे लिए बहुत मूल्यवान

हैं।'' बड़े सन्तोष के साथ, जो उसके चेहरे पर स्पष्ट झलक रहा था, ब्राह्मण अपने घर लौट गया।

उसकी पत्नी उत्सुकतापूर्वक महल से अपने पति के लौटने की प्रतीक्षा कर रही थी जहाँ वह दो दिनों के अन्दर दूसरी बार गया था। उसे आशा थी कि उसका पति काफी धन के साथ-साथ कुछ मूल्यवान उपहार भी लायेगा। ''मेरे प्रिय पति, आप क्या लाये हैं?'' बड़ी आशा के साथ उसने पूछा, क्योंकि उसने पति को मुस्कुराते हुए देखा।

''बहुत ही मूल्यवान वस्तु, मैं तो कहूँगा; ऐसी चीज़ जिसे इस राज्य में राजा की ओर से

किसी ने भी प्राप्त नहीं किया होगा!'' ब्राह्मण ने कहा।

''कृपया दिखाइये तो'', पत्नी ने अनुरोध किया।

ब्राह्मण ने अपने शॉल की गाँठ में से सिक्का और कौड़ी निकाली और उसकी तलहथी पर रख दिया। ''यह राजा के पसीने की कमाई है-रत्नों अथवा राजकोष की स्वर्ण मुद्राओं से भी अधिक मूल्यवान, लेकिन वे सब के सब उसे उसकी प्रजा से प्राप्त हुए थे। दोनों में यही अन्तर है।''

''धत्'', ब्राह्मण की पत्नी ने तिरस्कारपूर्वक कहा। कौन ताम्बे का सिक्का मात्र और कौड़ी लेना चाहेगा? और तुम उन्हें मूल्यवान कहते हो! तुम्हें क्या हो गया है?'' उसने उन्हें फेंक दिया और वे इसके साधारण से घर के सामने के खुले प्रांगण में बिखर गये।

ब्राह्मण शान्त बना रहा क्योंकि अपनी पत्नी से वह झगड़ा नहीं करना चाहता था। वह चुपचाप अपनी दिनचर्या में लग गया और पत्नी भी अपने घरेलू काम में व्यस्त हो गई। जल्दी ही वे दोनों ताम्बे के सिक्के और कौड़ी के बारे में भूल गये और रात होने पर सो गये।

जब वे दूसरे दिन सुबह उठे तो उन्होंने क्या देखा? जहाँ ताम्बे का सिक्का गिरा था, वहाँ पर एक सुनहला पेड़ खड़ा था जिस पर फलों कि तरह सोने के सिक्के लटक रहे थे। और जहाँ कौड़ी गिरी थी, वहाँ एक रूपहला पौधा उग आया था जिसमें चाँदी की कौड़ियों के साथ बहुत-सी शाखाएँ थीं।

वे दोनों खुशी से उछल पड़े और सिक्के तथा कौड़ियाँ तोडने लगे। ब्राह्मण सुनार से सिक्कों को बदल कर रुपये ले आया। ''मैंने कहा था न कि अब तक किसी ने भी राजा से ऐसा उपहार नहीं लिया था।'' ब्राह्मण ने कहा। पत्नी ने क्षमा माँगी, ''मुझे दुःख है कि मैंने ताम्बे के सिक्के और कौड़ी का तिरस्कार किया।

ब्राह्मण और उसकी पत्नी को तब से किसी प्रकार का अभाव महसूस नहीं हुआ और वे कालक्रम में सुखी-सम्पन्न और सन्तुष्ट दम्पत्ति के रूप में रहने लगे।

जल्दबाज़ी

विष्णु, शांता का इकलौता बेटा था। पिता जिस व्यापार को छोड़कर स्वर्गवासी हो गये थे वह उसे बड़ी ही जिम्मेदारी तथा सतर्कता के साथ संभाल रहा था। शांता अपने बेटे को बहुत चाहती थी। एक दिन खाना परोसते हुए उसने बेटे विष्णु से कहा, ''इस दशहरे पर तुम्हारे पिताजी के जिगरी दोस्त रामावतार अपनी बेटी को लेकर यहाँ आनेवाले हैं।''

''रामावतार ! लगता है, मैंने इनका नाम इसके पहले कभी नहीं सुना।'' आश्चर्य प्रकट करते हुए विष्णु ने कहा। ''हाँ'' के भाव में सिर हिलाती हुई शांता ने कहा, ''तुम्हारे जन्म के पहले हम दोनों एक ही घर में रहते थे। अलग होते हुए भी एक परिवार जैसा व्यवहार हम दोनों के बीच था। मेरे लिए वे भाई जैसे थे तो मैं उनके लिए बहन जैसी थी। तुम्हारे पिताजी और उनकी दोस्ती घनी थी। लोग उनकी घनी दोस्ती की वाहवाही करते हुए थकते नहीं थे। फिर कुछ सालों के बाद रामावतार व्यापार करने बहुत दूर चले गये। व्यापार में व्यस्त हो जाने के कारण यहाँ आना उनके लिए संभव नहीं हो पाया। अब हमसे मिलने के लिए वे लालायित हैं। उनके यहाँ आने के पीछे एक और कारण भी है। वे अपनी बेटी की शादी यहीं किसी अच्छे घराने में कराने की प्रबल इच्छा रखते हैं। इसीलिए उन्होंने यहाँ आने की ख़बर भिजवायी।''

फिर दो-तीन क्षणों तक वह सोच में पड़ गयी और फिर बोली, ''उन्हें मालूम भी हो गया होगा कि तुम अच्छी तरह से व्यापार संभाल रहे हो, योग्य हो। शायद वे अपनी बेटी की शादी तुमसे करना चाहते होंगे। उनके यहाँ आने के पीछे यह भी एक कारण हो सकता है।''

विष्णु ने माँ के बोलने की पद्धति पर आश्चर्य करते हुए कहा, ''तो क्या हुआ? आने दो।''

''इस बात की मुझे बड़ी खुशी है कि वे लंबे समय के बाद हमें देखने यहाँ आ रहे हैं। परंतु

- ललिता जायसवाल -

सुनने में आया है कि रामावतार की पत्नी झगड़ालू और कंजूस है। कहीं बेटी भी ऐसे ही स्वभाव की हो तो ! पड़ोसिन रुक्मिणी कह रही थी कि सीतापति अपनी बेटी जलजा का विवाह तुमसे करना चाहते हैं। इसलिए रामावतार इस विषय को लेकर तुमसे कोई बात करें तो उनसे कहना कि वे मुझसे बात करें। मुझसे पूछे बिना कोई निर्णय मत लेना।''

त्योहार आ ही गया। रामावतार अपनी बेटी पद्मा को लेकर आ गये। शांता और विष्णु ने बड़े ही प्यार से उनका स्वागत किया। पद्मा की सुंदरता ने शांता को मोह लिया। उसके स्वभाव पर भी वह रीझ गयी। रात को जब विष्णु घर आया, तब उसने उससे कहा, ''बेटे, देखा, लड़की कितनी सुंदर है! स्वभाव से भी बड़ी अच्छी लगती है। बहू हो तो ऐसी हो। दो-तीन दिनों के बाद रामावतार कुछ कहे या न कहे, मैं ही इस रिश्ते का प्रस्ताव रखूँगी।''

''माँ, बिना जाने कि उनकी क्या राय है, जल्दबाजी करना अच्छा नहीं है।'' विष्णु ने यों माँ को सावधान किया।

दो दिनों के बाद शांता ने विष्णु से एकांत में कहा, ''पद्मा मुझे बहुत अच्छी लगी। घर के काम-काजों में भी काफ़ी दिलचस्पी लेती है। मेरी समझ में नहीं आता कि रामावतार शादी को लेकर कोई भी बात क्यों नहीं कर रहे हैं। मैं ही उनके सामने यह प्रस्ताव रखना चाहती हूँ। कहो, तुम्हारी क्या राय है?''

विष्णु ने ज़रा चिढ़ते हुए कहा, ''वे लोग हफ़्ते भर यहीं रहनेवाले हैं। थोड़ी-सी सहनशक्ति से काम लो। तुम इस प्रकार जल्दबाजी करोगी तो उनकी नज़र में हमारी कोई इज़्ज़त रह नहीं जायेगी।''

शांता बिना कुछ बोले वहाँ से चली गयी। विष्णु भी जब वहाँ से जाने लगा तब पीछे से आवाज़ आयी। ''विष्णु!'' उस आवाज़ में मिठास भरी हुई थी।

विष्णु ने देखा कि पद्मा उसी की तरफ़ बढ़ी चली आ रही है। ''तुमने अभी सासू से जो बातें कीं, मैंने सुन लीं।''

विष्णु ने सकपकाते हुए कहा, ''माँ, हर बात में जल्दबाज़ी दिखाती है। इसलिए...'' यों कहते हुए वह रुक गया।

पद्मा ने मंद मुस्कान भरते हुए कहा, ''सासू के मन के सभी बिचारों को मैंने भांप लिया है। उन्हें भय है कि पता नहीं, कैसी बहू घर में क़दम रखेगी; इस वृद्धावस्था में उनकी ठीक तरह से देखभाल करेगी या नहीं। ऐसी स्थिति में उनका यह चाहना सही है कि शांत स्वभाव की कोई कन्या दिखायी पड़े तो यथाशीघ्र उसे अपनी बहू बनाने का निर्णय ले लेना चाहिये। और यह कोई जल्दबाजी नहीं कहलाती। आख़िर तुम इकलौते बेटे जो ठहरे।''

विष्णु ने 'हाँ' के भाव में सिर हिलाया।

पद्मा फिर से कहने लगी, ''मानव की मनोवृत्ति को सही तरह से समझने पर उसके व्यवहार के अच्छे और बुरे पक्षों को भी जान पायेंगे। अन्यथा टूटे शीशे के प्रतिबिंबों की ही तरह टेढ़े-मेढ़े और अटपटे दिखने लगेंगे।

मेरे पिताजी ने व्यापार में पर्याप्त सफलता प्राप्त की और कमाई का दुरुपयोग भी नहीं किया। मेरी माँ तुनकमिजाज है, इसलिए लोग उसे कंजूस और झगड़ालू कहते हैं। यहाँ आने के बाद ही मेरे पिताजी को मालूम हो पाया कि मेरी माँ के बारे में लोगों की, ख़ासकर हमारे रिश्तेदारों की क्या राय है। इस हालत में हमारे विवाह को लेकर सासजी से बात करने से वे सकुचा रहे हैं। अगर सासजी ही यह प्रस्ताव पेश करतीं तो हमारी दृष्टि में उनके प्रति आदर और बढ़ता।'' यह कहते हुए उसकी आँखों में आँसू उमड़ आये। उसने तुरंत अपना सर झुका लिया।

विष्णु ने एक क़दम आगे बढ़कर उसका हाथ अपने हाथ में लिया और कहा, ''जल्दबाज़ी माँ की नहीं, मेरी है। आगे-पीछे सोचे बिना मैं बक गया। मुझे माफ़ करना। पर अब तो लगता है कि जल्दबाज़ी करनी ही होगी।''

पद्मा ने चकित होकर पूछा, ''जल्दबाज़ी किस बात में?''

''हमारे विवाह को लेकर। जिस लड़की ने मेरी माँ को और मुझे इतना आकर्षित किया है, उससे बिवाह रचाने के विषय में जल्दबाज़ी करनी ही होगी न!'' विष्णु ने हँसते हुए कहा।

वहाँ से जाती हुई पद्मा ने सिर झुका लिया।

स्वर्ण पात्र

पाँच कल्प के पूर्व बोधिसत्व सेरिव नामक राज्य में बर्तन के एक व्यापारी के रूप में अपना जीवन बिताया करता था। वह पुराने बर्तन ख़रीदता और नये बर्तन बेचता था। इस व्यापार में बोधिसत्व न्यायोचित लाभ ही लिया करता था।

उसी राज्य में बर्तन बेचने व खरीदने वाला एक और व्यापारी था। वह पक्का कंजूस था। दोनों मिलकर ही व्यापार किया करते थे।

एक बार वे दोनों तेलिवाहा नामक नदी को पार कर आन्ध्रपुर पहुँचे। वे दोनों एक-दूसरे के व्यापार में दखल न दें, इस विचार से वे नगर की गलियों को समान रूप से बांट लेते थे।

आन्ध्रपुर में एक व्यापारी का परिवार था। वह परिवार एक जमाने में संपन्न था, पर अब निर्धन हो चुका था। उस परिवार में एक कन्या, एक बूढ़ी नानी तथा उनकी दरिद्रता बच गई थी। वे दोनों मजूरी करके अपना पेट पालती थीं।

उनके पास कई बर्तन थे। उनमें से एक सोने का पात्र था, जिसका उपयोग उस परिवार का प्रधान व्यापारी अपने जीवन काल में किया करता था। उस पर मैल जम गई थी, इस कारण वे दोनों औरतें समझ न पाईं कि वह पात्र असल में सोने का है।

कंजूस व्यापारी गलियों में ''पणिक चाहिए? या मणिक चाहिए?'' चिल्लाते उन औरतों के मकान के पास पहुँचा। पणिक माने हार और मणिक माने मिट्टी के पात्र हैं। यह चिल्लाहट सुनकर छोटी लड़की ने बूढ़ी से पूछा-''माँ, मुझे कुछ खरीदकर दे दो न?''

''बेटी, मैं तुम्हें क्या ख़रीदकर दे सकती हूँ? हमारे पास बचा ही क्या है?'' माँ ने जवाब दिया।

''हमारे पास एक पुराना बर्तन है न?'' बेटी ने कहा। इस पर उस औरत ने कंजूस व्यापारी को

घर के भीतर बुलाया और उसके हाथ बर्तन देकर कहा-"बेटा, तुम इसे लेकर अपनी बहन के वास्ते कोई चीज़ दे दो।"

कंजूस व्यापारी ने उस बर्तन को उलट-पलटकर देखा, लोहे की छड़ी से खरोंचकर जांच की। तब इस निर्णय पर पहुँचा कि वह सोने का ही है। उसने अपने मन में उस बर्तन को सस्ते में हड़पने का दृढ़ निश्चय कर लिया। तब बोला-"बहन, इसकी क़ीमत तो नहीं के बराबर है।" फिर उस पात्र को वहीं फेंककर चला गया।

बोधिसत्व और कंजूस व्यापारी के समझौते के अनुसार एक के किसी गली में हो आने के बाद दूसरा जाकर अपना व्यापार कर सकता था। इस निर्णय के अनुसार बोधिसत्व थोड़ी देर बाद यह पुकारते उन औरतों के मकान के पास पहुँचा-"मणिक चाहिए?"

यह पुकार सुनकर बेटी ने अपनी माँ से कहा-"माँ, मुझे कुछ ख़रीदकर दे दो न?"

"बेटी, हमारे घर में उस पुराने पात्र को छोड़ और बचा ही क्या है? एक व्यापारी उसे फेंककर चला गया। मैं और कौन चीज़ देकर तुम्हें कुछ खरीदकर दे दूँ," माँ ने कहा।

"माँ, वह व्यापारी भले आदमी जैसा नहीं लगता! उद्दण्ड मालूम होता है! इस व्यापारी का कण्ठ देखो न, कैसा सौम्य मालूम होता है!" बेटी ने कहा।

इस पर माँ ने बोधिसत्व को घर के भीतर बुलाया और वह पात्र उसके हाथ थमा दिया। बोधिसत्व ने उस पात्र को देखते ही समझ लिया कि वह सोने का पात्र है। बोला-"बहन, इस पात्र का मूल्य एक लाख मुद्राओं के बराबर है। इसके मूल्य की चीज़ें मेरे पास नहीं हैं।"

''बेटा, एक और व्यापारी इसे कौड़ी के बराबर का भी नहीं, बताकर चला गया है। शायद यह सोने का हो, हम क्या जानें? तुम इसके बदले में कुछ दे जाओ।'' बूढ़ी ने कहा।

बोधिसत्व ने अपनी थैली से पाँच सौ चांदी के सिक्के और पाँच सौ चांदी के सिक्कों के मूल्य के बर्तन उस औरत के हाथ सौंप दिया। तब कहा- ''बहन, आठ चांदी के सिक्के, थैली और तराज़ू को छोड़ बाक़ी सारी चीज़ें व सिक्के तुम्हें सौंप देता हूँ, ले लो।'' फिर वह सोने का पात्र लेकर चला गया। बोधिसत्व ने अपने पास आठ चांदी के सिक्के नदी को पार करने के लिए रखे थे।

इसके बाद कंजूस व्यापारी फिर उन औरतों के पास पहुँचा और बड़ी दया व त्याग करनेवाले के स्वर में बोला-''सुनो, वह पुराना पात्र देकर इनमें से कोई एक चीज़ ले लो।''

बूढ़ी औरत का क्रोध उमड़ पड़ा। उसने उस कंजूस व्यापारी से कहा-''भाई, तुमने तो एक लाख मुद्राओं के मूल्य के बर्तन को एक कौड़ी के बराबर भी नहीं बताया। एक और धर्मात्मा ने आकर इसके बदले में एक हज़ार मुद्राओं का मूल्य चुकाया और उसे ले गया है।''

यह सुनते ही कंजूस का दिमाग ख़राब हो गया। ''क्या एक लाख मुद्राओं के मूल्य के बर्तन को उसने हड़प लिया है? और मुझे इतना भारी नुक़सान पहुँचा दिया है?'' यों कहते वह आवेश में आ गया। वह रोते हुए अपने माल के साथ मुद्राओं को भी छोड़कर तराज़ू हाथ में ले नदी के तट की ओर दौड़ पड़ा। उसके वस्त्र भी छूट गये थे। नदी तट पर पहुँचकर उसने देखा कि बोधिसत्व नौका में नदी को पार कर रहा है।

कंजूस ने नौका को वापस लाने को पुकारा, पर बोधिसत्व ने मना किया। इस पर कंजूस का क्रोध और बढ़ गया। उसका कलेजा तेजी के साथ धड़कने लगा। उसके मुँह से ख़ून निकल आया। अधिक द्वेष के कारण उसका कलेजा फट गया और उस कंजूस व्यापारी ने वहीं पर दम तोड़ दिया।

इसके बाद बोधिसत्व ने दान-पुण्य करते हुए अपना शेष जीवन बिताया।
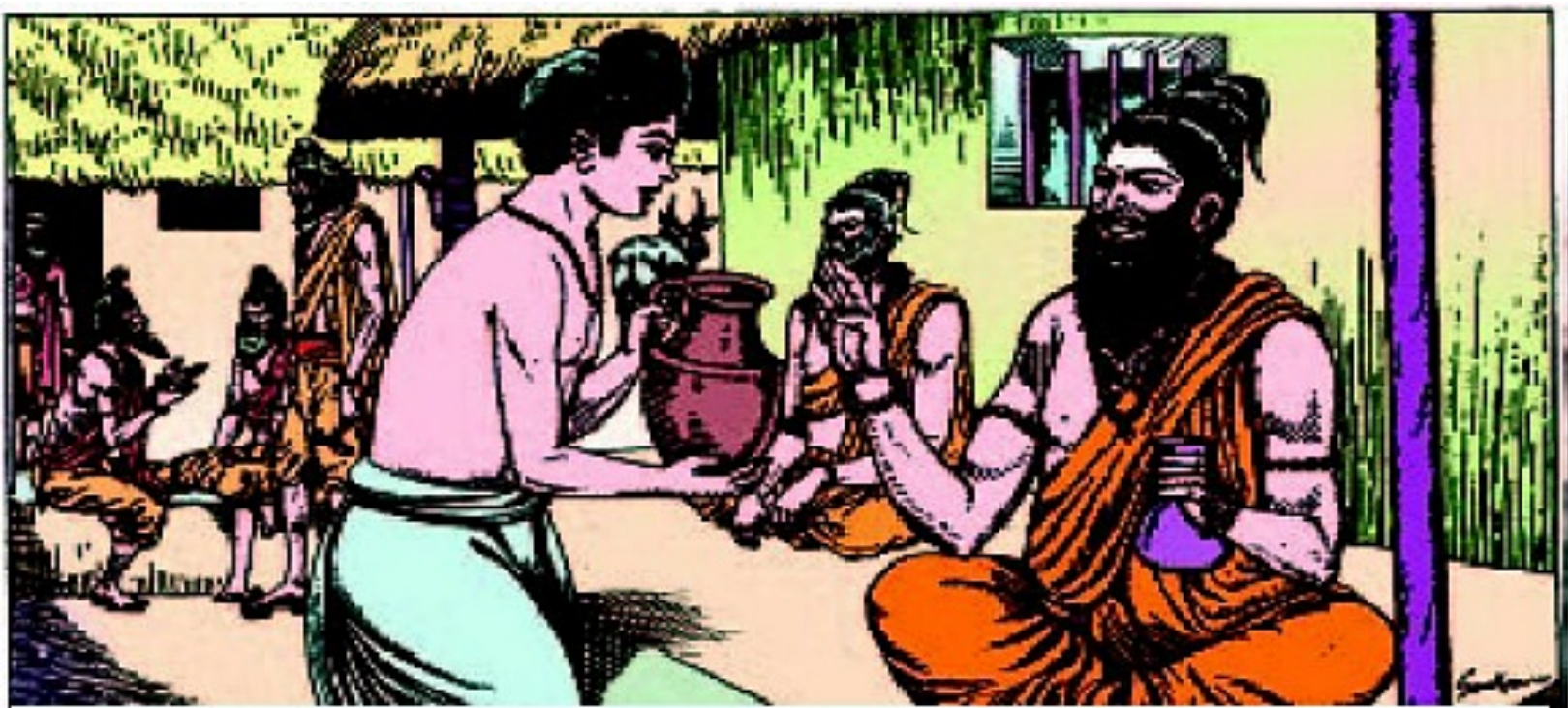
विष्णुपुराण

सूतमहर्षि ने नारदमुनि की कहानी सुनाना प्रारंभ किया - पिछले जन्म में नारद ने एक दासी-पुत्र के रूप में जन्म लिया था। वह दासी एक भक्त के घर में काम किया करती थी। उस भक्त के घर में सदा ऋषि-मुनि, साधु-संत अतिथि-सत्कार पाया करते थे। बालक नारद उन ज्ञानियों की सेवा में लगा रहता था। जरूरत के वक़्त उन्हें पानी पिलाया करता था। विष्णु भगवान की महिमाओं की चर्चा भी बड़ी श्रद्धा व भक्ति से सुनता था। नीर याने पानी देनेवाले बालक का नामकरण ''नारद'' करके वे लोग इसी नाम से उसे पुकारा करते थे।

इस बीच नारद की माँ साँप के डँसने से मर गई। बालक नारद को अपने पिता का बिलकुल पता न था। उसके साथी नारद को दासी-पुत्र और अनाथ बालक कहा करते थे। कुछ ही दिनों में उस मकान के मालिक का स्वर्गवास हो गया।

नारद को कहीं आश्रय नहीं मिला। वह इधर-उधर भटकता था। भूख लगने पर यदि वह किसी मकान के सामने जाकर खड़ा हो जाता तो लोग उसे भगा देते थे और गालियां देते थे कि यह बालक ऐसा पापी है जिसे अपने पिता का भी पता नहीं है। नारद साधु स्वभाव का था। इसलिए नटखट बच्चे उसपर पत्थर फेंकते और उसे सता कर आनंद का अनुभव करते थे।

गाँव के लोगों से तंग आकर नारद सोचने लगा - ''इन मनुष्यों के बीच मेरा जन्म क्यों हुआ है? मैंने कौन-सा अपराध किया है? ये लोग मेरे प्रति ऐसे अत्याचार क्यों करते हैं? आख़िर कीड़े-

मकोड़े, जंगल के जानवर भी मजे से जी रहे हैं।'' यों सोचते हुए नारद जंगल की ओर चल पड़ा। उसे ऋषि मुनियों की बातें याद हो आईं।

''मुझे भी तपस्या करके देवताओं के बीच जन्म लेना है!'' यों निश्चय कर नारद ने तपस्या करना शुरू किया।

''अनाथों का जो रक्षक है, जो सारे जगत का पिता है, वही मेरे लिए भी पिता है। वह मुझे कुछ भी बनाये, पसंद है।'' इस प्रकार सोचते नारद ने समय का ख्याल किये बिना भयंकर तपस्या शुरू कर दी। नारद की तपस्या पूर्ण हो गई। उसके भीतर एक तेज ने प्रवेश किया।

एक ज्योति के रूप में प्रत्यक्ष होकर विष्णु भगवान ने कहा- ''वत्स नारद, तुम मेरे अन्दर बिलीन होने जा रहे हो! इसके बाद तुम ब्रह्मा के मानस पुत्र के रूप में जन्म धारण करोगे! तुम चिरंजीवी होकर तीनों लोकों का भ्रमण करते हुए सदा मेरी स्तुति किया करोगे!''

इसके बाद नारद ने विष्णु के अंश को लेकर ब्रह्मा के मानस पुत्र के रूप में जन्म लिया और देवमुनि के रूप में पूजा पाने लगे। विष्णु भगवान की लीलाओं के अवतारों में एक नारद का अवतार भी बताया गया है!

ऐसे नारद मुनि से उपदेश पाकर ध्रुव तेज गति के साथ आगे बढ़े चले जा रहे थे । उस समय उत्तमकुमार रोते हुए आ पहुँचा और ध्रुव के सामने हाथ फैला कर उनको रोकते हुए बोला- ''भैया, आप कृपया जंगल में मत जाइये! आप जंगल में चले जायेंगे तो मैं किसके साथ मिलकर हरि का भजन करूँगा? मेरी माताजी ने आप को डांटा, पर मैंने क्या किया है? मुझ पर आप क्यों नाराज़ होते हैं? आप रुक जाइये।'' यों कहते हुए उत्तम फूट-फूट कर रोने लगा।

ध्रुव ने उत्तम कुमार के गले लगकर समझाया- ''मेरे छोटे भैया! मेरी माताजी ने मुझे जन्म दिया। मुझे क्या यह साबित नहीं करना है कि मेरी माताजी भी महान हैं? इसीलिए मैं जा रहा हूँ!''

उत्तम बोला- ''तब तो मैं भी आप के साथ चलूँगा! आप तपस्या में लग जाइये। मैं आपके लिए कंद-मूल - फल लाया करूँगा।''

''ऐसा करने पर तुम्हारी माँ रोयेंगी! मेरे छोटे भाई! मैं तुम्हारा बड़ा भाई हूँ। इसलिए तुम्हें मेरी बात माननी ही पड़ेगी। जाओ!'' ध्रुव ने कहा।

ध्रुव के मुँह से ये बातें सुनकर उत्तमकुमार

वहीं पर लुढ़क पड़ा और रोने लगा। सुरुचि आकर उसे समझाने लगी। इसपर उत्तम गुस्से में आकर बोला-"माँ, तुम मुझे छुओ मत! तुम्हारी वजह से ही बड़े भैया जंगल में जा रहे हैं!"

सुरुचि लज्जा के मारे सर झुकाकर अपने को कोसने लगी-"मैं पापिन हूँ! मेरे ही कारण यह सब हुआ ।" इतने में राजा उत्तानपाद पहुँचकर बोले- "ध्रुव! तुम रुक जाओ! यह सब मेरी मंद बुद्धि की वजह से ही हुआ है। मेरा राज्य तुम्हारा है। वापस चलो!"

इस बीच ध्रुव काफी दूर तक चले गये थे। नारद ने सुनीति से कहा- "माताजी, तुम्हारे गर्भ से एक रत्न जैसा पुत्र पैदा हुआ है। तुम अपने बेटे के बारे में बिलकुल चिंता मत करो! नारायण स्वयं उसकी रक्षा करेंगे।" फिर उत्तानपाद की ओर मुड़कर नारद बोले- "राजन्, हम सबको इस बात पर खुश होना चाहिए! आपके पिता और ध्रुव के दादा स्वायंभुव मनु के बंश के लिए भी बालक ध्रुव अपार यश का कारण बनेगा। इसमें किसी का कोई दोष नहीं है। यह श्रीमन्नारायण का संकल्प है!" यों समझाकर नारद मुनि ने सब को शांत किया।

मधुवन में बैठकर ध्रुव "ओम् नमोनारायणाय" का मंत्र जापते तपस्या कर रहे थे। यमुनानदी उस मंत्र में श्रुति मिला रही थी। ध्रुव की तपस्या से तीनों लोक कांपने लगे।

कोई यदि कहीं भी तपस्या करता हो, तो इंद्र यह सोच कर डरते हैं कि कहीं वह तप करके

उनके पद की कामना न कर बैठे। इस डर से उनके तप में बिघ्न डालने के लिए वे भयंकर इंद्रजाल रचा करते हैं। इसी प्रकार इंद्र ने अपने बज्रायुध को हिला कर आंधी-तूफान और बिजली गिराकर भयंकर उत्पात मचाये; पर ध्रुव थोड़ा भी विचलित न हुए। इस पर इंद्र ने पत्थरों की वर्षा शुरू की। मगर ध्रुव के सर पर घूमते हुए विष्णुचक्र ने उन पत्थरों को दूर फेंक दिया।

उस समय नारद ने जाकर इंद्र को समझाया - "आप ने ध्रुव को साधारण बालक मात्र समझा है। आप उनका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते। आपको व्यर्थ में अपमानित होना पड़ेगा। इंद्रपद तो ध्रुव के लिए घास के तिनके के बराबर है।"

अंत में ध्रुव की तपस्या पर प्रसन्न हो विष्णु भगवान प्रत्यक्ष हुए। ध्रुव विष्णु के पैरों से लिपटकर अपार आनंद के मारे मूक रह गये। वे

अपने मन में सोचने लगे - "भगवान! मैं पूर्ण हृदय से आपकी स्तुति करना चाहता हूँ। लेकिन मैं एक छोटा बालक हूँ! आप की स्तुति करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं!"

इस पर विष्णु ने अपने शंख को ध्रुव के गालों पर छुआ दिया। दूसरे ही क्षण वेदों के तत्वों से भरे स्तोत्र-पाठ साम गान के रूप में ध्रुव के मुँह से निकलने लगे। विष्णु ने मंदहास करते हुए पूछा- "ध्रुव! माँग लो, तुम क्या चाहते हो?"

ध्रुव भक्तिपूर्वक बोला-"हे परम पुरुष! जैसे भौंरा कमल से हमेशा लगा रहता है, वैसे ही सदा आप के मधुर मंदहास वाले मुख पद्म को देखते रहने की मेरी इच्छा है! इससे बढ़कर मैं कुछ नहीं चाहता!"

"अच्छी बात है! लेकिन पहले तुम अपने राज्य में जाकर धर्म का पालन करते हुए शासन करो। इसके बाद तुम मेरे विश्वरूप का शिरो भाग बने ध्रुव पद पर पहुँच जाओगे। कल्पांतों के बाद भी तुम उस अचल पद को ग्रहण कर सदा प्रकाशमान रहोगे।" यों समझा कर विष्णु भगवान अंतर्धान हो गये।

इसीलिए ध्रुव को अनुग्रह प्रदान करनेवाले विष्णु का अवतरण 'ध्रुव नारायणावतार' कहा गया है।

इसके बाद ध्रुव अपनी महिष्मती पुरी में आ गये। उत्तानपाद ध्रुव को अपना राज्य सौंप कर तपस्या करने चले गये।

उत्तमकुमार का अभी तक विवाह नहीं हुआ था। राजधर्म के अनुसार जंगली जानवरों से जनता की रक्षा करने के लिए वह शिकार खेलने गया। हिमालय के पहाड़ी जंगलों में दुष्ट यक्षों ने उस पर हमला करके उसको मार डाला।

अपने पुत्र की मृत्यु पर सुरुचि दुखी हो वहाँ पर पहुँची और जंगल के दावानल में फंसकर भस्म हो गई।

ध्रुव ने यक्षों का नाश करने के लिए यक्षनगर अलकापुरी को घेर लिया। मायावी यक्षों ने अपनी क्षुद्र मायाओं का उन पर प्रयोग किया। ध्रुव ने नारायण अस्त्र के द्वारा मायाओं को विफल बनाकर उनको हरा दिया। यक्ष-राज कुबेर ध्रुव की शरण में आये। उनसे मैत्री करके उनको संपति देकर वापस भेज दिया। ध्रुव के कई पुत्र हुए। उन्होंने अनेक वर्षों तक आदर्श शासन द्वारा स्वायंभुव मनुवंश को यश प्रदान किया। अनेक वर्षों तक

शासन करने के बाद ध्रुव ने अपने ज्येष्ठ पुत्र का राज्याभिषेक किया और वे बदरिकाश्रम में चले गये। वहाँ पर भगवान विष्णु का ध्यान करते हुए स्वर्ण शरीर को प्राप्त किया।

भगवान विष्णु के आदेश पर उनके सेवक एक बिमान ले आये। वे लोग भी देखने में विष्णु के समान थे और उनके भी चार-चार हाथ थे।

ध्रुव उन दूतों से बोले- ''मेरी माताजी के लिए जो पद प्राप्त नहीं है, उसकी मुझे भी ज़रूरत नहीं।'' इस पर विष्णु के दूतों ने उनके आगे एक दिव्य बिमान में जानेवाली सुनीति को दिखाया। इसे देख ध्रुव प्रसन्न हो उठे। वे बिमान पर सवार हो ग्रह मण्डल, नक्षत्र मण्डल तथा सप्तर्षि मण्डल को पारकर ध्रुव पद पर पहुँचे। ध्रुव मण्डल को विष्णु पद भी कहते हैं। विष्णु का निवास वैकुण्ठ भी वहीं पर है। ध्रुव देति में गोलोक भी होता है। गोलोक में विष्णु प्रकृति स्वरूपिणी राधादेवी के साथ वेणुगान करते हुए आनंद भोगते हैं। गोलोक के ऊपर गहरा अंधकार छाया रहता है। उस अंधकार के पार बिष्णु वैकुण्ठवासी बने प्रकाशमान होते हैं! ध्रुव सदा विष्णु को देखते उज्ज्वल कांति से द्युतिमान हो उठे। खूंटे से बंधी गाय की भांति सप्तर्षि मण्डल उनकी प्रदक्षिणा किया करता है। समस्त ग्रह गणों से पूर्ण शिशुमार चक्र उनके नीचे परिभ्रमण करता रहता है।

गोलोक के नीचे ब्रह्मा का निवास सत्यलोक, तपलोक, जनलोक, महलोक, स्वलोक, भुवलोक, भूलोक, नामक सात ऊर्ध्वलोक, तथा भूलोक के

नीचे अधोलोक कहलानेवाले अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल लोक ये सातों मिलाकर चौदह लोकों के ऊपर विश्व के शिखराग्र पर ध्रुव समस्त दिशाओं के लिए दिशासूचक बनकर अचल पद नक्षत्र के रूप में प्रकाशमान रहते हैं। लगन हो तो छोटे-बड़े सभी कार्य साधे जा सकते हैं। इसका प्रमाण पांच साल की उम्र में ही तप करने जानेवाला ध्रुव है।'' यों ध्रुव की कहानी समाप्त कर सूतमहर्षि फिर सुनाने लगे:

अगर मत्स्य केवल जलचर है तो कच्छप यानी कछुआ जल और भूमि पर भी चलता है। जल में से प्राणी भूमि पर आ गया यानी जलचर की दशा से भूचर तक का विकास हुआ। इसीलिए कछुए के रूप में विष्णु अवतरित हुए जो दशावतारों में दूसरा अवतार है।

इन शब्दों के साथ सूतमुनि ने कूर्मावतार की कहानी शुरू की:

देवता व राक्षस क्षीर सागर का मंथन करके अमृत पाने के लिए तैयार हो गये। बाहुबल और संख्या की दृष्टि से भी शक्तिशाली बने राक्षसों ने सोचा कि अगर अमृत प्राप्त होगा तो सारा अमृत उन्हीं लोगों का हो जाएगा।

राक्षसों को अमृत के द्वारा अगर अमरत्व प्राप्त हो जाएगा तो हमारा क्या नुक़सान होगा? सारी जिम्मेदारी विष्णु की ही मानकर देवता उन्हीं पर विश्वास करने लगे।

क्षीरसागर पर मंदर पर्वत को मथानी के रूप में खड़ा करके महासर्प वासुकी को रस्से के रूप में लपेट कर समुद्र का मंथन करने का निर्णय हुआ। लेकिन मंदीर पर्वत को लाकर क्षीर सागर में डालना किसी के लिए मुमकिन न था। विष्णु ने उन पर अनुग्रह करके यह काम संपन्न किया। इसीलिए वे गिरिधारी कहलाये।

राक्षसों ने वासुकी सर्प को सर के छोर से पकड़ने का हठ किया। विष्णु ने देवताओं को समझाया कि वे राक्षसों की बात मान लें। तब विष्णु ने भी सब के अंत में वासुकी की पूँछ के छोर को पकड़ लिया। इसके बाद क्षीर सागर को मथने का काम शुरू हुआ।

विविध संस्कृतियों की कहानियाँ
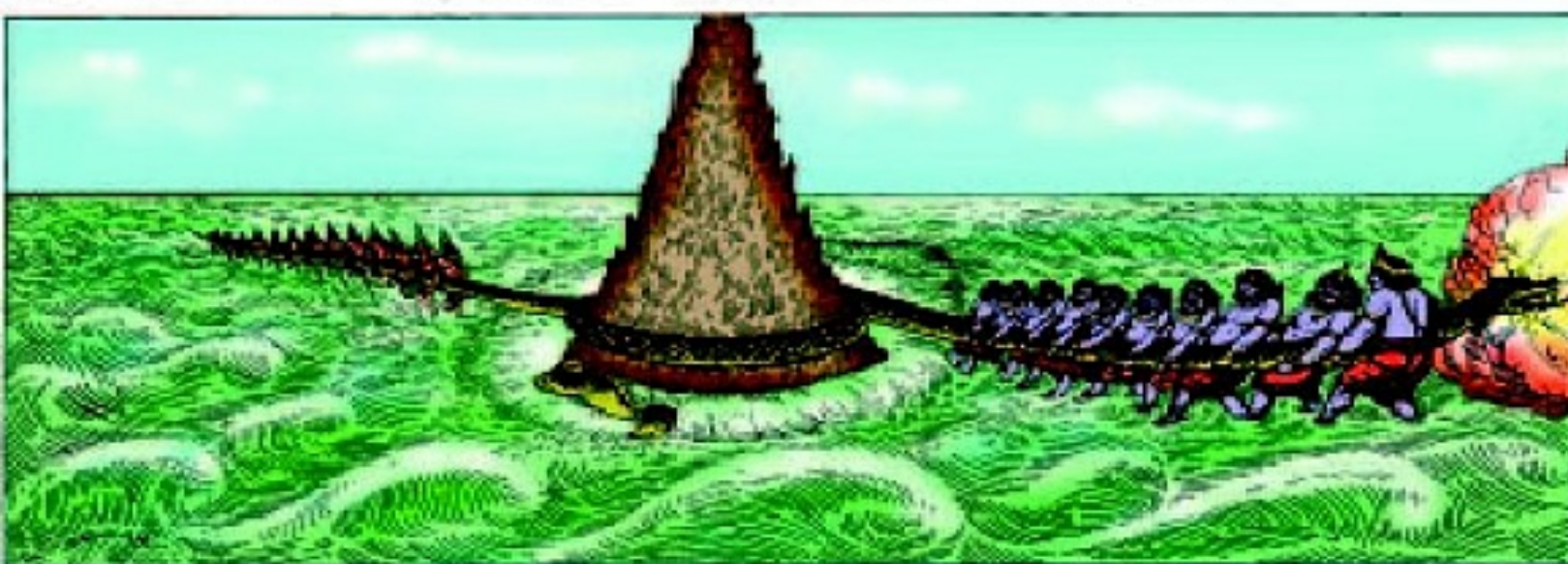
साँप का उपहार

एक समय की बात है, एक किसान के घर में गिजेला नाम की एक गरीब लड़की काम करती थी। वह अनाथ थी और अपनी आजीविका के लिए उसे कमाना पड़ता था। किसान उसे कुछ मजदूरी नहीं देता और बहुत कठिन परिश्रम करने के लिए बाध्य करता था। लेकिन कम से कम उसे तीन बार का खाना और सोने के लिए बिस्तर मिल जाता था। गिजेला, उसे जो कुछ मिलता था, उसके लिए किसान की कृतज्ञ थी।

एक सुबह किसान की पत्नी ने उसे बुला कर कहा, ''गिजेला, गिजेला, जाओ, गायों से दूध निकाल कर ले आओ।'' गोशाला वहाँ से दूरी पर थी और वर्षा हो रही थी। गोशाला पहुँचते-पहुँचते वह भीग गई। फिर भी ठण्ड से ठिठुरते हुए वह दूध दूहने लगी। जैसे ही उसकी बालटी भरी कि उसे पीछे से फुफकारने की आवाज सुनाई पड़ी। पीछे मुड़ कर उसने देखा कि एक बहुत बड़ा साँप उसी की ओर बढ़ता चला आ रहा है। उसके सिर पर एक स्वर्ण-मुकुट था। गिजेला के मुख से चीख निकलने वाली थी लेकिन उसकी आँखों पर नजर पड़ते ही वह रुक गई। उसकी आँखों से उसे ऐसा लगा कि वह प्यासा है और उसके लिए उसके मन में दया आ गई। उसने बालटी को झुका दिया

और साँप दूध चाट गया। फिर सन्तुष्ट होकर गिजेला को कृतज्ञता भरी नज़र से देखा और वापस रेंगता हुआ अदृश्य हो गया।

गिजेला यह देख कर घबरा गई कि साँप सारा दूध पी गया और बालटी के निचले भाग में थोड़ा सा बच गया है। वह जान गई कि किसान की पत्नी उसे डाँटेगी और आज उसे सम्भवतः नाश्ता नहीं देगी। वह डरती हुई घर के अन्दर गई।

''गिजेला, गिजेला, क्या तुमने गायों का दूध निकाल लिया?'' रसोई घर से किसान की पत्नी ने पुकारा।

''हाँ'', गिजेला ने धीमे से कहा।

''बालटी यहाँ ले आओ और दूध की कड़ाही

घर जाने पर हर बार दूध उमड़ने लगता था। किसान की पत्नी को आशा से अधिक दूध मिलने लगा। यह देख कर उसकी बाछें खिल जाती थीं। हाँ, उसे आश्चर्य अवश्य होता था कि गिजेला द्वारा दूध निकालने पर गायें अधिक दूध क्यों देती हैं। लेकिन सौभाग्यवश वह स्वयं इस बात की जाँच करने नहीं गई। इसलिए स्वर्णमुकुट वाले साँप के बारे में कोई जान न सका।

धीरे-धीरे साँप के साथ गिजेला की दोस्ती हो गई, क्योंकि उसने उसके जीवन को काफी आसान बना दिया था। वह चाहती थी, काश! वह उससे बात कर पाता। फिर भी, यद्यपि वह बोल नहीं सकता था, उसकी आँखों से विश्वास और कृतज्ञता की झलक दिखाई पड़ती थी।

में उसे डाल दो।'' किसान की पत्नी ने कहा।

गिजेला ने अपनी बालटी पलट दी और देखो! चमत्कार हो गया। उसकी बालटी से दूध गिरता रहा, इतना कि एक नहीं, तीन-तीन कड़ाहियाँ लबालब भर गईं।

''लड़की होशियार है!'' किसान की पत्नी ने उस पर पहली बार मुस्कुराते हुए कहा। मैं तुम्हें हर सुबह गायों से दूध निकालने के लिए भेजूँगी।''

''ओह नहीं, नहीं, मेहरबानी करके मुझे न भेजिये।'' साँप के बारे में सोचते हुए गिजेला ने कहा। ''कृपया मुझे कुछ और काम दे दीजिये।''

''आज से तुम्हीं दूध निकालोगी, सुबह भी, शाम भी,'' किसान की पत्नी ने कहा, ''मैं कोई बहाना नहीं सुनूँगी।''

गिजेला हर रोज दूध निकालने के लिए जाने लगी और माथे पर स्वर्ण मुकुट पहने साँप हर रोज उसकी बालटी का सारा दूध पीने लगा। लेकिन

दिन बीतते गये। गिजेला अब एक सुन्दर युवती बन गई थी। अनेक युवा किसानों ने उससे प्रेम याचना की और विवाह करना चाहा। किसान और उसकी पत्नी जान गये कि गिजेला अब उनके साथ अधिक दिनों तक नहीं रह पायेगी। इसलिए वे इसके प्रति अच्छा व्यवहार करने लगे।

गिजेला गायों से दूध निकालती रही और अन्य घरेलू कामों को भी करती रही। यह निश्चय नहीं था कि वह किस युवक से विवाह करेगी। अन्त में, गिजेला को एक ऐसा युवक मिला जो औरों से अलग था। इसलिए उसके प्रस्ताव को इसने सहर्ष स्वीकार कर लिया। किसान और उसकी पत्नी ने उसके विवाह के अवसर पर एक प्रीति भोज देने का निश्चय किया।

गिजेला आखिरी बार गायों का दूध निकालने गई। साँप और दिनों की तरह दूध पीने आया।

''क्या तुम्हें मालूम है प्रिय सर्प कि मैं आज़ आखिरी बार दूध पिलाऊँगी!'' गिजेला ने कहा, ''क्योंकि कल मेरा विवाह होने जा रहा है। विवाह के बाद मैं अपने पति के साथ नये घर में चली जाऊँगी और तुमसे नहीं मिल पाऊँगी। मेरे पति के पास गाय नहीं है, इसलिए अब तुम्हें दूध नहीं दे सकूँगी।'' गिजेला ने दुखी होकर कहा।

साँप ने दुःख और सहानुभूति के साथ उसे देखा।

''मुझे तुम्हारी कमी महसूस होगी प्रिय सर्प'', गिजेला ने कहा, ''तुम मेरे लिए कितने अच्छे थे! जिस युवक से मैं विवाह कर रही हूँ, वह गरीब है। लेकिन वह एक अच्छा और दयालु इनसान है। और हम गरीब होते हुए भी उसके साथ सुख और आनन्द से रहेंगे।'' साँप एक बार फिर उसे प्यार से देख कर चला गया।

गिजेला की शादी की दावत शानदार थी। गाँव का हरेक आदमी वहाँ उपस्थित था। अचानक वहाँ सन्नाटा छा गया। सब लोग खड़े हो गये पर किसी को पता नहीं चला कि बात क्या है! पहले उन सब ने एक फुफकार सुनी। फिर उन्होंने देखा कि स्वर्णमुकुट पहने एक साँप सरकता हुआ वहाँ आया। वह दुलहन के पास गया और उसके कन्धे पर चढ़ कर अपने मुकुट को तब तक हिलाता रहा जब तक वह दुलहन की गोद में गिर नहीं पड़ा। फिर वह सरकता हुआ बाहर आकर अन्धेरे में अदृश्य हो गया। सब के सब यह देख कर चकित रह गये। लेकिन गिजेला की आँखों में कृतज्ञता के आँसू छलक आये जब उसने देखा कि उसका मित्र कैसे उसकी शादी की दावत में उपस्थित होने आया है। उसने उस लघु स्वर्ण मुकुट को अपने पर्स में रख लिया। दावत और आनन्दोत्सव सुबह तक चलता रहा।

जब गिजेला ने दूसरे दिन सुबह अपना पर्स खोला तो वह सोने के सिक्कों से भरा हुआ था। जब उसने उन्हें पर्स से बाहर निकाला तो उसमें और सोने के सिक्के भर गये। उस दिन से उसका पर्स कभी खाली नहीं हुआ चाहे वह कितने ही सिक्के निकालती। गिजेला और उसका पति वहाँ के सबसे धनी दम्पति बन गये।

उन्हें सब प्यार करने लगे, इसलिए नहीं कि वे धनी थे, बल्कि इसलिए कि वे भले और उदार हृदय के थे और अपने धन से दूसरों की सहायता करते थे, खास कर किसानों की जिन्होंने गिजेला का घर बसाया था।

-स्वप्ना दत्ता

दोस्त को भाई समझो

जब तुम किसी को कुछ स्वादिष्ट खाद्य खाते देखते हो, तब क्या तुम्हारे मुँह में पानी नहीं आता? और तब तुम्हें कैसा लगेगा जब वह तुम्हें तो थोड़ा-सा दे और अपने लिए ज्यादा और बड़ा हिस्सा रख ले? हममें से अधिकांश को तो बहुत खराब लगेगा। लेकिन किसी को हर चीज़ में बराबर की भागीदारी में दृढ़ विश्वास था। उसकी छः वर्ष की आयु में ही उसमें न्याय और समानता के प्रबल बोध के संकेत मिलते थे।

वह बालक अपने घर के सामने अपने एक मित्र के साथ खेल रहा था, जो उससे उम्र में थोड़ा बड़ा, सम्भवतः ८ वर्ष का रहा होगा। जब वे खेल रहे थे तब बालक की माँ एक प्लेट में एक चपाती लेकर घर से बाहर आई। जब उसने देखा कि उसका बेटा अकेला नहीं है तब उसने चपाती के दो भाग कर दिये।

उसने चपाती के दोनों टुकड़ों को अपने बेटे को देकर बड़े टुकड़े की ओर इशारा करते हुए कहा, "बेटे, यह तुम्हारे लिए है और दूसरा भाग तुम्हारे दोस्त के लिए है!" बालक ने अपने हाथ में रखे दोनों टुकड़ों को देखा। फिर उसने बड़ा टुकड़ा अपने मित्र को दे दिया और स्वयं छोटा टुकड़ा खाया। उसकी माँ यह देखकर चकित रह गई। "तुमने ऐसा क्यों किया?" उसकी माँ ने पूछा।

उत्तर में बालक ने कहा, "क्या तुमने पहले मुझे नहीं कहा है कि दोस्त भाई के समान होता है। इसलिए क्या यह उचित नहीं है कि बड़े भाई को बड़ा टुकड़ा मिलना चाहिये और छोटे भाई को छोटा टुकड़ा?" उसकी माँ अपने बेटे के ज्ञान भरे शब्दों को सुनकर चकित रह गई। यह बालक बड़ा होकर एक महान शिक्षक बना तथा बाद में बम्बई हाई कोर्ट का न्यायाधीश हुआ। भारत भर में लोग इन्हें महादेव गोविन्द रानाडे के नाम से जानते हैं।

राजा शान्तिदेव के लापता हो जाने के कारण शान्तिपुर अशान्ति में डूबा है। रानी अब नहीं रही। शिशु-राजकुमार जयानन्द ऋषि के साथ सुरक्षित है। वे जयनगर के सरदार से मिल कर उसे राजकुमार का, शाही चिह्न के साथ चेन और लॉकिट सुरक्षित रखने के लिए सौंप देते हैं।
आर्य
9
अज्ञात राजकुमार का रहस्य
चित्र : गाँधी अय्या
जयानन्द जाने के लिए खड़ा हो जाते हैं।
मैं चेन को सुरक्षित रखूँगा, बाबा।
वर्तमान स्थिति के लिए जो भी जिम्मेदार होगा, उसे अपने जीवन की कठिनतम परीक्षा से गुजरना होगा।
बाबू, मेरी अन्तरात्मा कहती है कि राजा ने अपने जीवन की रक्षा कर ली है।
आशा है, जल्दी ही वे प्रकट होंगे और राज्य में शान्ति पुनर्स्थापित करेंगे, बाबा।
तब तक मैं और कुछ क्या कर सकता हूँ?
हमें इन्तजार करते हुए स्थिति पर नज़र रखनी होगी। अब हमें जाने दो। मन्दिर पर बाघा हमारी प्रतीक्षा करता होगा।

शान्तिपुर में वीर सिंह राजतिलक की प्रतीक्षा किये बिना राजा का अधिकार अपने हाथ में ले लेता है।
अमर सिंह, हमें प्रजा का ध्यान दूसरी ओर मोड़ देना चाहिये। हम क्यों न पड़ोसियों पर आक्रमण कर दें! तुम्हारा क्या विचार है?
क्यों नहीं अमृतपुर पर...? राजा प्रेमनाथ अपनी बेटी और शिशु-पुत्र के लापता हो जाने के कारण बीमार हो गये हैं।
सेनापति अमरसिंह अपने कमानों के साथ गुप्त बैठक करता है।
दूसरे दिन एक भट्ठीघर में-
हम लोग अमृतसर कब प्रयाण करेंगे?
मेरी तलवार खून की प्यासी हो रही है।
कमान लोग छद्म वेश में छिपे बसन्त को नहीं पहचान पाते। वह उनकी बातचीत सुन लेता है।
अमृतपुर? आक्रमण!
मुझे तुरन्त अमृतपुर वापस लौटना चाहिये। आह! यह तो छिपा हुआ वरदान है।
वह बाहर बंधा हुआ एक कमान का घोड़ा खोल लेता है और उस पर सवार हो चला जाता है।

अमृतपुर में शान्तिपुर के पूर्व मंत्री मानवेन्द्र से मिलता है।
बसन्त! शान्तिपुर से क्या खबर लाये हो?
सर, सेना कल अमृतपुर पर आक्रमण करने की योजना बना रही है!
हमें शीघ्र ही राजा प्रेमनाथ को सावधान कर देना चाहिये।
मानवेन्द्र के साथ अमृतपुर सेना का कमाण्डर है।
मेघनाथ ने सेना को सावधान कर दिया है, महाराज।
महाराज! अपने खून के आखिरी कतरे तक राज्य की रक्षा करेंगे।
वे आसानी से यहाँ तक नहीं आ पायेंगे। मुझे विश्वास है कि नन्दिनी नदी हमारी रक्षा करेगी।
पूर्णिमा की रात है। शान्तिपुर की सेना नदी पार करने की तैयारी करती है।

अचानक एक तूफान आ जाता है....
......और नदी उमड़ने लगती है
नावें डगमगाने लगती हैं, कभी इस तरफ, कभी उस...
हाय! मेरी नाव डूब रह
बचाओ!
हमारा कमान कहाँ है?
बचाओ! मैं डूब रहा हूँ!
....और सिपाही बहते जा रहे हैं। अनेक डूब चुके हैं। राजा प्रेमनाथ का पूर्वाभास सच निकला।
यहाँ और इन्तजार करने का कोई लाभ नहीं।
आओ, अमर सिंह, राजधानी लौट चलें।
-क्रमशः

बिजली बचाओ

एक शाम को जब वीना और ग्रैण्ड पा लूडो खेल रहे थे, वीना के डैडी ने अन्दर प्रवेश किया। वे परेशान से लग रहे थे। ग्रैण्ड पा ने पूछा, ''क्या बात है, बेटे?''

''पिताजी, इस महीने का बिजली का बिल बहुत ज्यादा आया है!'' वीना के डैडी ने उत्तेजित और अशान्त स्वर में कहा। ''यदि ऐसा ही होता रहा तो हमारा तो सर्वनाश हो जायेगा। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि इन बढ़ते हुए बिलों का प्रबन्ध कैसे करूँ?''

''मैं इसका उत्तर दे सकता हूँ।'' ग्रैण्ड पा ने मधुर स्वर में कहा। ''जरा अपने चारों ओर नजर डालो।''

उन्होंने ऐसी चीजों की ओर इशारा किया जिसकी ओर उनका ध्यान कभी नहीं गया था और सारा परिवार शर्मिन्दा होकर एक टक देखता रहा। टी.वी.चल रही थी हालांकि उसे कोई नहीं देख रहा था। सभी कमरों में लाइट्स और पंखे ऑन थे जब कि परिवार के सब लोग ड्राइंग रूम में थे।

''फिजूलखर्ची के और कई उदाहरण दे सकता हूँ'', ग्रैण्ड पा बोलते रहे। उन्होंने वीना को कहा, ''अनेक बार मैंने देखा है कि तुम पानी के लिए फ्रिज खोलती हो और जब तक पानी पीकर बोतल को वापस रख नहीं देती, तब तक फ्रिज को खुला छोड़ कर रखती हो। इससे शीतल करने की शक्ति कम हो जाती है और अतिरिक्त बिजली खर्च होती है।'' वीना के लिए यह नई बात थी।

उसने निश्चय किया कि अब वह ऐसा कभी नहीं करेगी। ग्रैण्ड पा ने जारी रखा, ''उसी तरह, तुम अक्सर गीज़र को घण्टों ऑन रखती हो, इस्तेमाल करने के बाद भी। इससे बहुत बिजली खर्च होती है।''

वे थोड़ी देर रुक कर फिर बोले, ''तुम बड़े भाग्यवान हो कि तुम सब ऐसे युग में रहते हो जहाँ बटन के स्पर्श मात्र से बहुत कुछ हो जाता है। गाँव में मेरे बचपन के दिनों में बिजली नहीं थी। मैं मिट्टी के तेल के दीये से पढ़ा करता था। टी.वी.नहीं थी, फ्रिज, मिक्सी, ग्राइण्डर कुछ नहीं था। कल्पना करो, तब जीवन कैसा रहा होगा! तब तुम बिजली को व्यर्थ खर्च करना नहीं चाहोगे।'' यह शान्ति प्रदान करनेवाला विचार था। वीना ने तुरन्त निश्चय किया कि वह बिजली के उपकरणों को बिना इस्तेमाल के कभी ऑन नहीं रखेगी और इस प्रकार बिजली बचाने की अपनी भूमिका अवश्य निभायेगी।

आप के पन्ने आप के पन्ने

तुम्हारे लिए विज्ञान

नेत्र-त्राण

ऊपर की ओर देखने की कोशिश करो और तुम अपनी भौंहें देख सकते हो। हम्म! तुम किसी को चकित होकर देखते हो! भौंहों का आखिर प्रयोजन क्या है? इसका उत्तर शायद तुम्हें आश्चर्य में डाल देगा। इसके होने का बहुत अच्छा कारण है। यदि हमारी भौंहें नहीं होतीं तो पसीने की बून्दें बल्कि ललाट से बहती पसीने की नदियाँ - जैसा कि भारत में ग्रीष्म ऋतु में किसी को रहने का अनुभव होगा- हमारी आँखों में चली जातीं। इससे न केवल हमारी दृष्टि धुंधली हो जाती, बल्कि हमारे स्वास्थ्य को भी हानि पहुँचती, क्योंकि पसीने में शरीर से निकली हुई गन्दगी शामिल रहती है। इस प्रकार हमारी भृकुटियाँ विश्व के झरोखे - हमारे अमूल्य नेत्रों के लिए कवच का काम करती हैं।

अच्छे आकार की भौंहें आँखों के सौन्दर्य को दिग्दर्शित करती हैं। नेत्र हमारे मुख मण्डल के सबसे अधिक महत्वपूर्ण अंग हैं, न केवल अपने आकार-प्रकार के कारण बल्कि इसलिए कि वे हमारे भावों के अभिव्यंजक होते हैं और हमारे चेहरे को जीवन्त बनाते हैं।

तुम्हारा परिवेश

उड़न-मण्डूक

टहनी को पाँव की एक उंगली से पकड़ कर कौन लटक सकता है? नदी किनारे झूलते सरकण्डे पर कौन सन्तुलन रख सकता है? अथवा ऊँचे पेड़ के सीधे खड़े धड़ पर कौन चिपटा चिपक कर रह सकता है?

वृक्ष मण्डूक ऐसे सारे कमाल कर सकते हैं। कैद में प्रशिक्षित करने के बाद कुछ मण्डूकों ने एक खिलौने सर्कस के झूले पर सर्कस कलाबाज की सारी हरकतें प्रदर्शित की हैं।

वास्तव में, वे इस तरह के प्रदर्शन के लिए मानव की अपेक्षा अधिक साधनयुक्त हैं, क्योंकि उनके पाँव की उंगलियों के छोर चूषण-गद्दियों के समान होते हैं। इनके द्वारा ये वृक्ष मण्डूक किसी भी सतह को पकड़ सकते हैं।

वृक्ष मण्डूकों की लगभग ५०० जातियाँ हैं जो प्रायः हरेक महादेश के विविध आवासों में पायी जाती हैं।

आप के पन्ने आप के पन्ने

क्या तुम जानते थे?

यूमी यम!

न्यू गाइना में सेपक नदी के पास रहनेवाले ऐबलम आदिवासी यम की सैकड़ों किस्में उपजाते हैं।

सर्वोत्तम यम का उत्पादन ऐबलम लोगों के लिए प्रतिष्ठा की बात है। वे नियमित रूप से यम उत्सव का आयोजन करते हैं,जिसमें लोग व्यक्तिगत रूप से, तथा कुल और गाँव की ओर से

स्व उत्पादित सर्वोत्तम यम का प्रदर्शन करते हैं। औसत यम ९ फुट लम्बा होता है, जब कि सचमुच उत्तम प्रकार का १२ फुट का हो सकता है!

प्रदर्शित यम को रंग-बिरंगी रूप रेखाओं और मुखौटों में रंगा और सजाया जाता है। उत्सव के दौरान प्रदर्शित यमों को खाया नहीं जाता। वे वितरित कर दिये जाते हैं। ऐबलम लोग इस बात का विशेष ख्याल रखते हैं कि जो यम वे वितरित करते हैं, वह उन्हें अपने पार्टनर या मित्र से मिलनेवाले यम से बड़ा हो।

अपना बौद्धिक स्तर विकसित करो

तुम भारतीय पुराण कितनी अच्छी तरह जानते हो?

१. महाभारत युद्ध में नकुल ने किसके साथ युद्ध किया था?

२. ककुत्स्थ कौन था? रामायण से मिला लो।

३. शब्यशची महाभारत के एक महारथी का नाम है। उसका अधिक लोकप्रिय नाम क्या है?

४. छाया किसकी प्रिया है?

५. रावण का एक बेटा देवान्तक राम-रावण युद्ध में किसके द्वारा परास्त किया गया?

(उत्तर ६६ पृष्ठ पर)

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा
चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक
दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

SOURAA

SIVARKKAMANI

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स ऑफिसर्स कॉलोनी, इकाडुथांगल, चेन्नै -६०० ०९७.
जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

जनवरी अंक के पुरस्कार विजेता हैं :
महेन्द्र कुमार गुप्ता द्वारा श्री अरुण कुमार
सर्राफ, ए-५०, कचहरी रोड,
सिविल लाइन, मीरजापुर -२३१००१.
(उत्तर प्रदेश)

विजयी प्रविष्टि

जीवन में भाग्य का खेल।
हम बच्चों का आपसी मेल ॥

'अपना बौद्धिक स्तर विकसित करो' के उत्तर

१. शकुनि
२. राम के पूर्वजों में से एक
३. अर्जुन
४. सूर्य
५. हनुमान

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : B. Viswanatha Reddi (Viswam)